अध्याय 1. कडबक

: कवि का परिचय :-

" कवि - मालिक मुहम्मद जायसी

जन्म - 15 वीं शती उत्तरार्ध, अनुमानतः1492

निधन - 1548 अनुमानतः।

निवास स्थान- जायस, कब्र अमेठी, उत्तर प्रदेश

पिता- मलिक शेख ममरेज (मलिक राजे अशरफ)

गुरु - सूफी संत, शेख मोहिदी और सैयद अशरफ जहाँगीर।

वृति (कार्य/ व्यवसाय) - आरंभ में किसानी, शेष जीवन फकीरी में

बचपन में ही अनाथ, साधुओं-फकीरो के साथ बचपन बीता।

कृतियॉ रचना - पदमावत, अखरावट, चित्ररेखा, कहरानामा आखिरी कलाम। चंपावत, होलीनामा, इतरावत|

व्यक्तित्व - चेचक के कारण रूपहीन (काला रंग), बाई आँख और कान से वंचित । मृदुभाषी, मनस्वी और स्वभाव से संत थे।

महत्वपूर्ण जानकारी

(1) मलिक मुहम्मद जायसी "प्रेम की पीर' के कवि हैं।

(2) जायसी प्रेममार्गी कवि थे।

(3) जायसी अवधी भाषा के कवि थे ।

(4) जायसी प्रेमख्यानक परंपरा के कवि थे।

(5) जायसी अपनी ऑख की तुलना दर्पण से करते थे।

(6) जायसी भक्तिकाल के कवि थे।

(7) कड़बक 'पदमावत' से संकलित है।

(8) प्रथम कड़बक 'स्तुतिखंड" से लिया गया है।

(9) द्वितीय कड़बक "उपसंहार खंड" से लिया गया है

(10) जायसी प्रारंम में किसान थे।

(11) जायसी फकीर थे।

(12) जायसी काले रंग के थे ।

(1)एक नैन कबि मुहम्मद गुनी। सोई बिमोहा जेई कबि सुनी।

अर्थ- प्रस्तुत पंक्ति हमारी पाठ्यपुस्तक दिगंत भाग-2 के कडबक कविता शीर्षक पाठ से लिया गया है। जो पदमावत के प्रारंभिक छंद (स्तुतिखंड) से संकलित है। कवि कहते हैं। कि एक नेत्र के होते हुए भी जायसी गुणवान है उनकी काब्य को जो सुनता है वह मोहित हो जाता है।

(2)चॉंद जइस जग विधि औतारा । दीन्ह कलंक कीन्ह उजिआरा । जग सूझा एकइ नैनाहाँ । उवा सुक अस नखतन्ह माहाँ ।

अर्थ: ईश्वर ने उन्हें चंद्रमा के सामान तो बनाया । परंतु कलंकी भी कर दिया। कवि चन्द्रमा के समान अपने काव्य की प्रकाश को संसार मे फैला रहे हैं। कवि नक्षत्रों में शुक्र तारे के समान एक ही नेत्र से संसार देखते हैं।

(3)जी लहि अंबहि डाभ न होई। तो लहि संगंध बसाई न सोई कीन्ह समुन्द्र पानी जीं खारा। तो अति भएऊ असूझ अपारा ।

अर्थः जबतक आम में मंजरी नहीं होती तबतक उसमे सुगंध नही आती। विधाता ने सागर का जल भी खारा बना दिया तभी वह आकाश तक ऊंचा हो गया ।

(4) जों सुमेरू तिरसूल बिनासा । भा कंचनगिरि लाग अकासा । जीं लहि घरी कलंक न परा । कांच होइ नहिं कचन करा ।

जबतक सुमेरू पर्वत को त्रिशुल से नष्ट नहीं किया गया तबतक वह भी सोने का नहीं हुआ। जबतक धेरिया (पात्र) में सोने को गलाया नहीं जाता तबतक वह कच्ची धातु सोना नही होता। और उसमें चमक नहीं आता ।

(5) एक नैन जस दरपन औ तेहि निरमल भाउ । सब रूपवत गहि मुख जोवहिं कइ चाउ ।।

अर्थ- यह नेत्र दर्पण की तरह निर्मल और स्वच्छ हैं उनके इसी गुण के कारण बड़े-बड़े रूपवान उसके पाँव पकड़कर चाव से उसका मुंह जोहते हैं।

द्वितीय कड़बक का भावाथ_

(1)मुहम्मद यहि कबि जोरि सुनावा । सुना जो प्रेम पीर गा पावा

अर्थ - प्रस्तुत पंक्ति हमारी पाठ्यपुस्तक दिगंत भाग- 2 के कड़बक कविता शीर्षक पाठ से लिया गया है । जो पद्मावत के अंतिम उंद (उपसंहार खंड) से संकलित है। कवि कहते है कि मैंनें यह काव्य रचकर सुनाया है जिसने भी इसे सुना उसे प्रेम की पीड़ा का सुखमय अनुभव हुआ।

(2)जोरी लाइ रकत कै लेई। गाढ़ी प्रीति नैन जल भेई औ मन जानि कबित अस कीन्द्रा। मकु यह रहै जगत महँ चीन्हा।

अर्थ- मैनें इस प्रेम काव्य को लेई लगाकर जोड़ा है। इसकी गाढी प्रीति को आँसुओ के जल से भिंगोया है। इस काव्य की रचना मैनें इसलिए किया कि मेरे ना रहने के बाद इस संसार में मेरी आखिरी निशानी यही हो।

(3)कहाँ सो रतनसेनि अस राजा। कहाँ सुवा असिबुधि उपराजा।

कहाँ अलाउद्दीन सुल्तानू। कहाँ राधी जेई कीन्ह बखानू ।कहाँ सुरूप पद्मावति रानी। कोई न रहा जग रही कहानी।

अर्थ- अब न वह रत्नसेन है और न वह बुद्धिमान सुवा है न अलाउद्दीन, न वह राघवचेतन और न वह रूपवती पद्मावती रानी। इनमें से कोई आज नहीं रहा किन्तु रह गई उनकी यश की कहानी।

(4)धनि सो पुरुख जस कीरति जासू । फूल मरै पै मरै बासु ।

ATM Classes Since-2017

अर्थ - जिस प्रकार फूल के मुरझा जाने पर भी उसकी सुगंध रह जाती है ठीक उसी प्रकार कृतिमान पुरुष के मर जाने के बाद भी उसकी मान, प्रतिष्ठा व कृति नहीं मरती है।

(5)केई न जगत जस बेचा केई न तीन्ह जस मोल।
जो यह पड़े कहानी हम सैवरै दुइ बोल।।
इस संसार में यश न तो किसी ने बेचा है और न ही किसी ने खरीदा है। जो-जो मेरे कलेजे के खून से रचित कहानी को पढ़ेगा वह हमे जरुर दो शब्दों में याद रखेगा।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न 5 अंक

(1) पहले 'कड़वक' में कलंक, काँच और कंचन से क्या तात्पर्य है? 2020
उत्तर- कड़बक शीर्षक कविता के रचनाकार मलिक मुहम्मद जायसी है। इन्हे 'प्रेम के पीर' कवि भी कहा जाता है। ईश्वर ने जायसी को चन्द्रमा के समान तो बनाया परंतु उन्हें कलंकी भी कर दिया। फिर भी कवि चन्द्रमा के समान अपने काव्य की प्रकाश को संसार में फैला रहे है। कलंक का अर्थ है कलंकित बिना दोष के आरोप लगाना, काँच का अर्थ है कच्ची धातु और कंचन का अर्थ है सोना। जबतक धरिया में काँच को गलाया नहीं जाता तबतक उसमें चमक नहीं आती है।

(2) कड़बक' कविता का भावार्य लिखिए। 2015

उत्तर- कड़बक शीर्षक कविता के रचनाकार मलिक मुहम्मद जायसी जी है। यह कविता पद्मावत् के प्रथम छन्द और अंतिम छंद से संकालिंत है। एक आँख के होते हुए भी जायसी गुणवान है उनकी काव्य को जो भी सुनता है वह मोहित हो जाता है। ईश्वर ने जायसी को चन्द्रमा के समान बनाया है लेकिन उसे कलंकी भी कर दिया है। फिर कवि चन्द्रमा के समान अपने काव्य की प्रकाश को संसार में फैला रहे हैं। कहा गया है जबतक घड़िया में सोने को गलाया नहीं जाता तबतक उसमें चमक नहीं आतीं। कवि का नेत्र दर्पण की तरह निर्मल है. स्वच्छ है इसी गुण के कारण बड़े से बड़े विद्वान, रूपवान चाव से उसका मुँह जोहते हैं। जिस प्रकार फूल के मुड़झा जाने पर भी उसकी सुगंध रह जाती है। ठीक उसी प्रकार कृतिमान पुरुष मर जाता है लेकिन उसका नाम, प्रतिष्ठा और कृति कमी नहीं मरती है। जो-जो जायसी के काव्य को पढ़ेगा वह उसे जरुर याद रखेगा।

(3) दूसरे कड़बक का भाव-सौंदर्य स्पष्ट करें। 2020/2023

उत्तर- कड़बक शीर्षक कविता के रचनाकार मलिक मुहम्मद जायसी है। यह कविता पद्मावत के प्रथम छन्द और अंतिम छन्द से संकलित है। दूसरा कड़बक उपसंहार खंड से लिया गया है। दूसरे कड़बक में कवि कहते हैं कि मैनें यह काव्य रचकर सुनाया है जो लोग इसे सुने वह प्रेम-पीड़ा का सुखमय आनन्द लिया। मैंने इसे इसलिए रवा ताकि इसके जरिए में लोगों के यादो में रहूँ जिस प्रकार फूल के मुड़झा जाने के बाद उसकी सुगंध रह जाती है ठीक उसी प्रकार मेरे मर जाने के बाद भी मेरी मान, प्रतिष्ठ और कृति कभी नहीं मरेगी पाठक हमे इस काव्य के कारण याद रखेंगें।

(4) जायसी का काव्यात्मक परिचय दें। 2015, 2016
उत्तर- मलिक मुहम्मद जायसी को प्रेम के पीर कवि कहा जाता है। जायसी जी अवधी भाषा के कवि थे। जायसी भक्ति काल के कवि थे। इनकी महान रचना कड़बक शीर्षक कविता है जो पद्मावत से लिया गया है। चेचक के कारण ये रूपहीन व काले रंग के फकीर संत थे। इनकी अन्य रचना पद्मावत, अखरावट, चित्ररेखा, कहरानामा, आखिरी कलाम, होलीनामा, इतरावत आदि है।

(5) पहले कड़बक में व्यंजित जायसि के आत्मविश्वास का परिचय अपने शब्दों में दें।

उत्तर- कड़बक शीर्षक कविता के रचनाकार मलिक मुहम्मद जायसी है। पहला कड़वक पद्मावत के पहला छंद स्तुति खंड से लिया गया है। एक नेत्र के होते हुए भी जायसी बहुत गुणी व्यक्ति थे। उनकी काव्य में वो जादू था जो सुनता वो मोहित जाता था। ईश्वर ने उन्हे चन्द्रमा के समान बनाया परंतु कलंकित भी कर दिया। फिर भी अपने काव्य की प्रकाश से संसार को उजागर किये। एक ही आँख से पूरा संसार देख लिये। जायसी को आत्मविश्वास था कि जिस प्रकार फूल मुरझा जाती है किन्तु सुगन्ध रह जाती है उसी प्रकार मेरे मरनेके बाद भी मेरा नाम, प्रतिछठा और कृतिमान जग मे रहेगा।

सप्रसंग व्याख्यात्मक प्रश्न 4 अंक
1. "धनि सो पुरुख जस कीरति जासू। 2019 फूल मरै पै मरे न बासू।। "
उत्तर- पस्तुत पंक्ति हमारी पाठ्यपुस्तक दिगंत भाग-2 के कड़बक कविता शीर्षक पाठ से लिया गया है। जो पद्मावत के अंतिम छंद (उपसंहार खंड) से संकलित है। कवि कहते हं कि जिस प्रकार फूल के मुरझा जाने पर भी उसकी सुगंध रह जाती है ठीक उसी प्रकार कृतिमान पुरुष के मर जाने के बाद भी उसकी मान, प्रतिष्ठा व कृति नहीं मरती है।

2. 'एक नैन जस दरपन तौ तेहि निरमल भाउ।
सब रूपवत गहि मुख जोवहिं कई चाउ ।।" 2012 उत्त - प्रस्तुत पंक्ति हमारी पाठ्यपुस्तक दिगंत भाग -2 के कड़बक कविता शीर्षक पाठ से लिया गया है। जो पद्रावत के प्रारंभिक छंद (स्तुतिखंड) से संकलित है। कवि कहते हैं एक नेत्र के होते हुए भी जायसी गुणवान है उनका यह नेत्र दर्पण की तरह निर्मल और स्वच्छ हैं उनके इसी गुण के कारण बड़े- बड़े रूपवान उसके पाँव पकड़कर चाव से उसका मुँह जोहते है।

3. जौ लहि अंबहि डाभ न होई। तौ लहि सुगंध बसाई न सोई। कीन्ह समुन्द्र पानी जौ खारा। तौ अति भएऊ असूझ अपारा।
उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति हमारी पाठ्यपुस्तक दिगंत भाग - 2 के कड़बक कविता शीर्षक पाठ से लिया गया है । जो पद्मावत के प्रारंभिक छंद (स्तुतिखंड) से संकलित है। कवि कहते है जबतक आम में मंजरी नहीं होती तबतक उसमे सूगंध नहीं आती । विधाता ने सागर का जल भी खारा बना दिया तभी वह आकाश तक ऊंचा हो गया ।

लघु उत्तरीय प्रश्न 2 अंक

1. जायसी की दो रचनाओं के नाम लिखें । 2019 उत्तर- मलिक मुहम्मद जायसी की दो रचनाओं के नाम है (i) पद्मावत (i) अखरावट

2. कड़बक के कवि की सोच क्या है? 2015
उत्तर- कडबक शीर्षक कविता के रचनाकार मलिक मुहम्मद जायसी है। कवि की सोच यह है कि जिस प्रकार फल झड़कर नष्ट हो जाता है पर उसकी खुशबू रह जाती है। ठीक उसी प्रकार कवि भी एक दिन मर जायेंगे पर उनकी लिखि कविता अमर रहेगी।

3. मल्लिक मुहम्मद जायसी की प्रेम संबंवी अवधारणा क्या हैं? 2018
उत्तर- मलिक मुहम्मद जायसी प्रेम की पीर के कवि है। इन्हें प्रेममार्गी कवि भी कहते हैं। जायसी के कडबक कविता में प्रेम के भाव अत्यंत सुखदायक है। इनके प्रेम कहानि में प्राणों का पणोसेलदय काइद्य से मेल है।जायसी की प्मकनिता शहद के जैसी मीठी है।
जोहते हैं।

4. कवि ने अपनी एक ऑख की तुलना दर्षणसे कयांकी है?
उत्तर - कवि मलिक मुहम्मद जायसी ने अपनी एक आँख की तुलना दर्पण से इसलिए किये क्योंकि दर्पण वास्तविक चेहरा ही दिखाता हैं। दर्पण के सामने जो रहेगा दर्पण उसी का प्रतिबिंब दिखाता है कवि दर्षण की तरह ही निर्मल और स्वच्छ स्वभाव के हैं।

5. 'रकत कै लेई' का क्या अर्थ है?
उत्तर- 'रकत कै लेई" यह पंक्ति कड़बक शीर्षक कविता से उद्धत है । जिसके रचनाकार मलिक मुहम्मद जायसी जी हैं। इस पंक्ति का यह अर्थ है कि जायसी ने अपने काव्य को रक्त की लेर्ड से जोड़ा है जिसमें नेत्रों की आँस की मोती और प्रेम रस का संगम है।

ATM Classes Since-2017

6. 'मुहम्मद यहि कवि जोरि सुनावा।' यहाँ कवि ने 'जोरि शब्द का प्रयोग किस अर्थ में किया है?
उत्तर- कवि मलिक मुहम्मद जायसी ने जोरि शब्द का प्रयोग 'जोडना' के अर्थ में किये हैं क्यंकि जोर का अर्थ अवधि भाषा में जोइना हीं होता है।
7. कवि ने किस रूप में स्वयं को याद रखे जाने की इच्छ व्यक्त की है?
उत्तर- कवि मलिक मुहम्मद जायसी ने अपने काव्य की रचना रक्त की लेई जोरकर किये है। इसमें गहरे प्रेम की पीर है। कवि स्वयं कहते है कि जिस प्रकार फूल के मुरझा जाने के बाद भी उसकी सुगंध रह जाती है ठीक उसी प्रकार मेरे मरने के बाद भी मैं काव्य के रूप में संसार में जीवित रहंगा ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नः _

1. इनमें से 'प्रेम की पीर' के कवि हैं- [2018A, 2022A)
- जायसी
(2. जायसी किस शाखा के कवि है? [2014A
- प्रेममार्गी
3. जायसी की रचना निम्र में से कौन है? [2023A}
- कड़बक
4. जायसी किस भाषा के कवि थे? [2024A
- अवधी
5. 'कड़बक' के रचयिता हैं- [2018A]
- जायसी
6. मलिक मुहम्मद जायसी कैसे कवि हैं? (2019A)
-प्रेममार्गी
7. 'मलिक मुहम्मद जायसी' किस परंपरा के कवि है?
- प्रेमख्यानक
8. मलिक मोहम्मद जायसी की मृत्यु कब हुई?
-लगभग 1548
9. जायसी का जन्म स्थान है [2021A}
-जायस, कब्रअमेठी उत्तर प्रदेश
10. "चित्रेखा' किस कबि की रचना है? [2021A}
-मलिक मुहम्मद जायसी
11. जायसी ने अपनी आंख की तुलना किससे की है?
- दर्पण से
12. निम्न में कौन कृति जायसी की नहीं है?
(A) पद्मावत (3) अखरावट (C) चित्रखा (D)
-भक्तमाल
13. 'कडबक' में कौन-सी बात पायी जाती है
-प्रेम की महिमा
14. जायसी की रचना भाषा है
-अवधी
15. "मुहम्मद कवि यह जोरि सुनावा' कवि ने जोरि शब्द का प्रयोग किस अर्थ में किया है ?
-जोड-जोड़कर
16. मलिक मुहम्मद जायसी किस काल के कवि हैं।
-भक्तिकाल
17. 'पद्मावत' किस भाषा में रचा गया ?
- अवधी
18. कड़बक कहाँ से लिया गया है"
-पद्मावत
19. 'सुमेरु" का पर्याय है,
-कंचन गिरि
20. जायसी किस भाषा के कवि थे?
-अवधि

#Chapter_02

पद (सूरदास)

कवि परिचय _

कवि - सूरदास (जन्म से अंधे)
बचपन का नाम - मदन मोहन
जन्म - 1478ईस्वी (अनुमानित) ब्राह्मण परिवार में
मृत्यु - 1583
जन्म स्थान - दिल्ली के सिही नामक ग्राम
दीक्षा काल - 1509-10 अनुमानित
अभिरुचि- पर्यटन सत्संग कृष्ण भक्ति एवं वैराग्य
स्वभाव -अंतर्मुखी मृदुल विनम्र नीराभिमानी भावुक
कृतियां या रचना- सूरसागर सुरसावली साहित्य लहरी राधारसकेली

महत्वपूर्ण जानकारी _

1 सूरदास को हिंदी साहित्य का सूर्य माना जाता है ।
2 सूरदास बृजवासी कवि थे ।
3 सूरदास शगुन भक्ति धारा के श्री कृष्ण भक्त कवि थे ।
4 सूरदास ने सर्वप्रथम राजभाषा को साहित्यिक रूप दिया ।
5 सूरदास की मृत्यु 1583 में गोवर्धन के पास स्थित पारसोली नामक गांव में हुआ था।
6.महाप्रभु बल्लबाचार्य पुष्टिमार्ग के संस्थापक थे ।
7 सूरदास अष्टछाप के सर्वश्रेष्ठ कवि थे।
8 सूरदास भक्ति काल के मध्ययुगीन कवि थे ।
9 सूरदास अकबर के समकालीन कवि थे।
10 संस्कृत साहित्य में जो स्थान वाल्मीकि जी का है वही स्थान ब्रजभाषा के साहित्य में सूरदास जी का है।
11 साहित्य की दृष्टि से सूरदास की तुलना वाल्मीकि जी से किया गया है ।
12 महाप्रभु वल्लभाचार्य के 8 शिष्यों में सबसे महत्वपूर्ण शिष्य सूरदास थे जो आजीवन अविवाहित रहे।
13. सूरदास के पद सूरसागर पुस्तक से ली गई है।
14.काव्य के तीन प्रधान विषय विनय- भक्ति ,वात्सल्य और प्रेम - श्रृंगार है।
15. ब्रज क्षेत्र के पारसोली ग्राम में सूरदास सबसे अधिक रहे हैं।
16. सूरदास वात्सल्य भाव के सर्वोत्तम कवि हैं ।
17. दोनों पद वात्सल्य भाव के हैं जो सूरसागर में संकलित है।
18. प्रथम पद में दुलार बड़े कोमल मधुर स्वर में सोए हुए बालक कृष्ण को भोर होने की संकेत देते हुए जगाने का वर्णन है।
19. दूसरे पद में पिता नंद के गोद में बैठकर बालकृष्ण का भोजन करने का वर्णन है।
प्रस्तुत दो पद वात्सल्य भाव के हैं और सूरसागर से संकलित हैं

–: प्रथम पद में दुलार बड़े कोमल मधुर स्वर में सोए हुए बालक कृष्ण को भर होने की संकेत देते हुए जगाने का वर्णन है

–:द्वितीय पद में पिता आनंद की गोद में बैठकर बालक कृष्ण को भोजन करते दिखाया जा रहा है

प्रथम पद

जागिए ब्रजराज कुँवर कँवल - कुसुम फूले।
कुमुद- वृंद संकुचित भए, भृंग लता भूले।
अर्थ - माता यशोदा बालक कृष्ण से कहती है।
हे ब्रजराज कुँवर भोर हो रही है जागिए ।कमल के फूल खिल गए हैं , कुमुद के पुष्प मुरझा गए हैं भौंरे लताओं में छिप गए हैं।

तमचूर खग - रोर सुनहु बोलत बनराई।
राँभति गो गरिखनी में बछरा हित धाई।
अर्थ - मुर्गी एवं अन्य पक्षियों का शोरगुल सुनाई दे रहा है। पेड़ पौधे बोल रहे हैं ।गाय गौशाला में रंभा रही है। अपने बछड़े के पास जाकर दूध पिलाने के लिए

विधु मलिन रवि प्रकाश गावत नर नारी।
सूर श्याम प्रात उठौ, अंबुज- कर -धारी।
अर्थ - चंद्रमा का प्रकाश मंद हो चुका है।
और सूर्य की किरणें चारों ओर फैल रही है। गांव के सभी नर - नारी भजन- कीर्तन गा रहे हैं । हे कमल धारी (कृष्ण)! अब जागिए सबेरा हो गया है।

प्रथम पद का भावार्थ या सारांश

प्रस्तुत प्रथम पद हमारे पाठ्य पुस्तक दिगंत भाग - 2 के सूरदास रचित पद शीर्षक कविता से लिया गया है । इस पद के माध्यम से कवि कहते हैं ।इस पद में माता यशोदा दुलार भरे कोमल मधुर स्वर में बालक कृष्ण से कहती है । हे ब्रजराज कुंवर भोर हो रही है जागिए । कमल के पुष्प खिल गए हैं, कुमुद के पुष्प मुरझा गए हैं, भौंरे लताओं में छिप गए हैं। मुर्गों एवं अन्य पक्षियों का शोरगुल सुनाई दे रहा है। पेड़- पौधे भी बोल रहे हैं। गाय गौशाला में रंभा रही है बछड़े के पास जाकर दूध पिलाने के लिए। चंद्रमा का प्रकाश मंद हो चुका है और सूर्य की किरनें चारों ओर फैल रही है । गांव के सभी नर - नारी भजन कीर्तन गा रहे हैं। हे कमल - धारी (कृष्ण) अब जागिए सवेरा हो गया है।

ATM Classes Since 2017

द्वितीय पद

जेंवत श्याम नंद की कनियाँ।
कछुक खात, कछु धरनि गिरावत, छवि निरखति नंद - रनियाँ।

अर्थ - बालकृष्ण नंद बाबा की गोद में बैठकर खा रहे हैं। कुछ खा रहे हैं कुछ धरती पर गिरा रहे हैं कृष्ण के इस रूप को छवि को भोजन करने के ढंग को नंद बाबा और माता यशोदा प्रसन्नता पूर्वक देख रहे हैं।

बड़ी बड़ा बेसन बहु भांतिनी, व्यंजन विविध अगनियाँ।
डारत खात लेत अपनैं कर, रुचि मानत दधि दोनियाँ।

अर्थ - बेसन से बनी बरी- बरा एवं विभिन्न प्रकार के व्यंजन को अपने हाथों से लेकर खाते हैं और कुछ छोड़ देते हैं ।मिट्टी के पात्र में रखी हुई दही में विशेष रुचि ची लेते हैं । दही अत्यंत स्वादिष्ट लग रहा है।

मिश्री ,दही ,मक्खन मिश्रित करि, मुख नावत छवि धनियाँ।
आपुन खात ,नंद- मुख नावत, सो छवि कहत न बनियाँ।

अर्थ - मिश्री ,दही और माखन मिलाकर स्वयं मुख में खाते हैं और अपने नंद बाबा के मुख में भी लगाते हैं। इस छवि भरी आनंद का वर्णन कोई नहीं कर सकता है

जो रस नंद- यशोदा बिलसत नहिं तिहूँ भुवनियाँ। भजन करि नंद अचमन लिन्हौं माँगत सूर्य जुठनियाँ।

अर्थ - नंद बाबा और माता यशोदा जिस रस का पान कर रही है वह तीनों लोक में दुर्लभ है। नंद बाबा भोजन करने के बाद कुल्ला करते हैं ।तब सूरदास जी उस जूठन को माँगते हैं उस जूठन को प्राप्त करना अपना सौभाग्य समझते हैं।

द्वितीय पद का भावार्थ या सारांश

प्रस्तुत द्वितीय पद हमारे पाठ पुस्तक दिगंत भाग - 2 के सूरदास रचित पद शीर्षक कविता से लिया गया है।
इस पद के माध्यम से कवि कहते हैं। बालक कृष्ण नंद बाबा की गोद में बैठकर खा रहे हैं। कुछ खा रहे हैं कुछ धरती पर गिरा रहे है।कृष्ण के इस रूप को छवि को भोजन करने के ढंग को नंद बाबा और माता यशोदा प्रसन्न होकर देख रहे हैं । बेसन से बनी बरी- बरा एवं अन्य प्रकार के व्यंजन को अपने हाथों से लेकर कुछ खाते हैं, गिरते हैं कुछ गिराते हैं । मिट्टी के पात्र में रखी हुई दही में विशेष रुचि लेते हैं । दही अत्यंत स्वादिष्ट लग रहा है ।मिश्री, दही और माखन मिलाकर स्वयं मुख में खाते हैं कुछ नंद बाबा के मुख में लगाते हैं। इस छवि का वर्णन कोई नहीं कर सकता है ।इस समय नंद बाबा और माता यशोदा जिस रस का पान कर रहे हैं। वह तीनों लोक में दुर्लभ है । नंदबाबा भोजन करने के बाद कुल्ला कर रहे हैं तब सूरदास जूठन मांग रहे हैं । सूरदास इस जूठन को प्राप्त करने में अपना सौभाग्य समझते हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न 5 अंक

1. सूरदास के प्रथम पद का भावार्थ अपने शब्दों में लिखे 2013-2017

- सूरदास कृष्ण भक्ति धारा के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं ।सूर ने वात्सल्य रस का वर्णन किया है ।प्रथम पद में माता यशोदा दुलार भरे कोमल मधुर स्वर में बालक कृष्ण से कहती है। हे ब्रजराज कुंवर भोर हो रही है जागिए ।कमल के पुष्प खिल गए हैं कुमुद के पुष्प मुरझा गए हैं भंवरे लताओं में छिप गए हैं ।मुर्गों एवं अन्य पक्षियों का शोरगुल सुनाई दे रहा है ।पेड़ पौधे भी बोल रहे हैं ।गाय गौशाला में रंभा रही है बछड़े के पास जाकर दूध पिलाने के लिए। चंद्रमा का प्रकाश मंद हो चुका है ।और सूर्य की किरणें चारों ओर फैल रही है गांव के सभी नर - नारी भजन कीर्तन गा रहे हैं। हे कमल- धारी (कृष्ण)! अब जागिए सवेरा हो गया है।

2 सूरदास के किसी एक पद का भावार्थ लिखें। 2017

3. सूरदास रचित पठित पाठ के आधार पर सूर के वात्सल्य रस वर्णन की विशेषताएँ लिखिए । 2022

उत्तर: - माता-पिता एवं संतान के प्रेम भाव को प्रकट करने वाले रस को वात्सल्य रस कहते हैं। सूरदास वात्सल्य रस के अद्वितीय कवि हैं। वात्सल्य रस की प्रमुख विशेषता यह है कि
ये माता-पिता और संतान के बीच में प्रेम. स्नेह और ममता को दर्शाता है। इसे पढ़कर पाठक भी आनन्दित हो उठता है I
सूरदास के प्रथम पद में यशोदा माँ दुलार भरे कोमल - मधुर स्वर में बालक कृष्ण को भोर होने की अनेकों संकेत देते हुई जगाती है। यहाँ माँ की ममता झलकती है। और दुसरे पद में नंदबाबा की गोद में बैठकर बालक कृष्ण कुछ खाते हैं तो कुछ
गिराते हैं। यहाँ पिता का स्नेह झलता है। सूर के दोनों पद में वात्सल्य रस का वर्णन है।

सप्रसंग व्याख्यात्मक प्रश्न 4 अंक

1. आपुन खात, नंद मुख नावत, जो रस नंद – जसोदा बिलसत, सो नहिं तिहूँ भुवनियाँ | [2013, 2017, 2020]

उत्तर: - प्रस्तुत पंक्ति हमारी पाठ्यपुस्तक दिंगत भाग – 2 के सूरदास रचित पद शीर्षक कविता से लिया गया है | जिसमें कवि कहते हैं कि बालक कृष्ण अपने से खा रहे हैं और नंद बाबा के मुख में भी लगा रहे है | इस छवि का वर्णन कोई नहीं कर सकता हैं | नंदबाबा और माता यशोदा इस समय जिस रस का पान कर रही है | वह तीनों लोक में दुर्लभ है |

2. "कछुक खात, कुछ धरनिगिरावत, छबि निरखति नंद-रानियाँ" [2023]

उत्तर: - प्रस्तुत पंक्ति हमारी पाठ्यपुस्तक दिंगत भात - 2 के सूरदास रचित पद शीर्षक कविता से लिया गया है | इस पंक्ति के माध्यम से कवि कहते हैं कि बालक कृष्ण नंदबाबा की गोद में बैठकर खा रहें हैं | कुछ खा रहे है कुछ धरती पर गिरा रहे हैं | कृष्ण के इस छबि को और भोजन करने के ढंग को नंदबाबा और माता यशोदा प्रसन्नतापूर्वक देख रहे हैं।

3. 'जो रस नंद – जसोदा बिलसत सो नहीं तिहूँ भुवनियाँ | भोजन करि नंद अचमन लीन्हों, माँगत सूर जूठनियाँ | [2011]

उत्तर: - प्रस्तुत पंक्ति हमारी पाठ्यपुस्तक दिंगत भाग - 2 के सूरदास रचित पद शीर्षक कविता से लिया गया है | इस पंक्ति के माध्यम से कवि कहते हैं कि नंदबाबा और माता यशोदा इस समय जिस रस का पान कर रहें हैं वह तीनों लोक में दुर्लभ है इसे कहीं प्राप्त नहीं किया जा सकता है नंदबाबा भोजन करने के बाद कुल्ला करते है | तब सूरदास जी नंदबाबा से जूठन माँगते हैं और जूठन को प्राप्त करने में अपना सौभाग्य समझते

लघु उत्तरीय प्रश्न 2 अंक

1. ब्रजभाषा के प्रारम्भिक कवि कौन हैं? [2019]

उत्तर: - ब्रजभाषा के प्रारंभिक कवि सूरदास जी हैं जिन्हें कृष्ण भक्तिधारा के सर्वश्रेष्ठ कवि कहा जाता हैं |

2. कृष्ण खाते समय क्या क्या करते हैं? [2023]

उत्तरः- बालक कृष्ण नंदबाबा की गोद में बैठकर खाते हैं खाते समय कुछ खाते हैं, कुछ धरती पर गिराते है | इस छबि को नंदबाबा और माता यशोदा प्रसन्न होकर देखते है | कृष्ण को दही में अत्यंत रूचि है | कुछ खाते हैं तो कुछ नंद बाबा के मुख में लगाते हैं।

3. कवि भगवान कृष्ण को जगाने के लिए क्या - क्या उपमा देते हैं? [2019]

उत्तर: - कवि सूरदास, भगवान कृष्ण को जगाने के लिए ब्रजराज कुँवर और अंबुजकर धारी कहते हैं |

4. गाये किस ओर दौड़ पड़ी?

उत्तर: - सूरदास रचित पद शीर्षक कविता में सुबह होते ही गाये अपने बछरे के पास जाने के लिए गौशाला में रंभाने लगती है और उसी ओर दौड़ पड़ती है |

5. प्रथम पद में किस रस की व्यंजना हुई है?

उत्तरः- सूरदास रचित पद शीर्षक कविता के दोनों पद में वात्सल्य रस की व्यंजना हैं | प्रथम पद में माता यशोदा दुलार भरे कोमल - मधुर स्वर में बालक कृष्ण को जगाने का वर्णन है।

ATM Classes Since-2017

वस्तुनिष्ट प्रश्नः-

1. 'सूरसागर' के कवि हैं - सूरदास
2. सूरदास किस भाषा के कवि हैं? - ब्रजभाषा
3. मीरा ने अपना प्रियतम किसे माना हैं? -कृष्ण को
4. हिंदी साहित्य का सूर्य किसे कहा जाता हैं? - सूरदास
5. सूरदास का जन्म स्थान कहाँ हैं? - सीही
6. कौन कवि सगुन भक्तिधारा के है? - सूरदास
7. 'जागिए, ब्रजराज, कुँवर, कँवल कुसुम फुले | यह पंक्ति किस शीर्षक कविता का हैं? - सूरदास के पद
8. किसकी रचना 'श्रीमद्भागवत' की पद्धित पर द्वाद्रश स्कंधों में हुई हैं? - 'सूरसागर' की
9. सत्संग में किनकी अभिरुचि थी? - सूरदास
10. भगवान श्रीकृष्ण किस कवि के पूज्य थे? -सूरदास के
11. निम्न में 'सूरदास' की कृति हैं- सूरसागर
12. 'साहित्यलहरी' के रचनाकार है- सूरदास
13. राँभति गो खरिकनि में, बछरा हित धाई' यह पंक्ति किस शीर्षक कविता से है? - सूरदास के पद से
14. 'राधारसकेली' किसकी रचना है? - सूरदास
15. सूरदास के दीक्षागुरु कौन थे? - महाप्रभु वल्लभाचार्य
16. सूरदास किस काल के कवि थे? - मध्यकाल
17. सूरदास के 'पद' किस पुस्तक से लिए गए है? -सूरसागर से
18. सूरदास का व्यक्तित्व कैसा था?
(A) जन्म से अंधे
(B) मृदुल व भावुक
(C) अन्तर्मुखी
(D) उपर्युक्त सभी
19. 'कनियाँ' का क्या अर्थ है? - गोद
20. सूर के काव्य के तीन प्रधान विषय क्या है?
(A) विनय - भक्ति
(B) वात्सल्य
(C) प्रेम - श्रृंगार
(D) उपर्युक्त सभी
21. सूरदास का जन्म कब हुआ था अनुमानित ? -1478
22. सूरदास का मृत्यु कब हुआ? -1583
23. सूरदास का निवास स्थान कहाँ है?- गऊघाट
24. ब्रजक्षेत्र की किस ग्राम में सूरदास सबसे अधिक रहे थे? - पारसोली
25. सूर किस काव्यधारा के कवि थे? -भक्ति

Chapter = 03

तुलसीदास

कवि का परिचय :-

कवि - तुलसीदास |
मूल नाम - रामबोला
जन्म- 1543
निधन -1623
जन्म-स्थान -राजापुर, बाँदा, उत्तरप्रदेश |
माता - हुलसी |
पिता- आत्माराम दुबे |
पत्नी - रत्नावली (विवाह के कुछ ही समय बाद वैराग्य के कारण विछोह)
प्रतिपालिका दासी - चुनियाँ ने ही तुलसीदास का पालन-पोषण की है | तुलसीदास के जन्म के कुछ ही समय बाद माता मर गई और पिता ने अपनाने से इनकार कर दिया तब उनकी प्रतिपालिका दासी चुनियाँ ने ही दास जी का पालन पोषण की
दीक्षा गुरु- नरहरि दास (सूकरखेत के वासी, गुरु ने विद्या आरम्भ कराया)
शिक्षा- शेष सनातन, काशी के विद्वान
शिक्षा- चारों वेद, षडदर्शन, इतिहास, पुराण, स्मृतियाँ, काव्य आदि की शिक्षा काशी में पंद्रह वर्षों तक प्राप्त की ।
निर्णायक घटना -
(i) काशी में विद्या अध्ययन के बाद जन्मभूमि लौटे और कथावाचक व्यास बन गए |
(ii) दीनबंधु पाठक ने दास जी के व्यक्तित्व और वक्तृता से प्रभावित होकर अपनी पुत्री रत्नावली से विवाह कर दिया |
(iii) पत्नी से प्रगाढ़ प्रेम और आसक्ति के कारण फटकारे जाने पर विरक्त हो गए ।
(iv) और तुलसीदास गृहस्थ जीवन एवं घर का परित्याग कर दिया |
स्थाई निवास -काशी
तीर्थयात्राएँ - सूकरखेत, अवध, चित्रकूट, प्रयाग, मथुरा, वृन्दावन, कुरुक्षेत्र, हरिद्वार, बद्रीनाथ, नैमिषारण्य मिथिला, जगन्नाथपुरी, रामेश्वर आदि |
मित्र और स्नेही - अब्दुर्रहीम खानखाना, महाराजा मानसिंह, नाभादास, दार्शिनिक मधुसूदन सरस्वती, टोडरमल आदि |
कृतियाँ - रामलला नहछू, वैराग्य संदीपिनी, बरवै रामायण, पार्वती मंगल, जानकी मंगल, रामाज्ञाप्रश्न, दोहावली, कवितावली, गीतावली, श्रीकृष्ण गीतावली, रामचरितमानस, विनय पत्रिका

Note - इसके अतिरिक्त 44 छंदों की हनुमान बाहुक रचना है जिसे कवितावली का ही अंग माना जाता है | तुलसीदास के कुल 12 या 13 कृतियों की कोई प्रामाणिकता नहीं है ।

*** व्यक्तित्व -**

(i) विनम्र, मृदुभाषी, गंभीर और शांत स्वभाव के गौरवर्ण के सुदर्शन व्यक्ति थे
(ii) इनके वक्षस्थल पर तुलसी से बनी बड़ी-बड़ी गुरियों वाली माला रहती थी |
(iii) वे कौपीन पहनते थे |
(iv) राम शब्द के 'रा' पद का उच्चारण होते ही रोमांचित हो उठते थे |
(v) दास जी अपना प्रसिद्ध पद "भारत भए ठाढ़े कर जोरि" अनुराग भरे प्रगाढ़ स्वर में गद् गद् कंठ से गाया करते थे |

*** रामचरितमानस का रचनाकाल -**

(i) रचना आरंभ काल 1631 (विक्रम संवत कैलेण्डर के अनुसार)
(ii) दिन/महिना चैत्र शुक्ल नवमी मंगलवार राम जन्म तिथि (रामनवमी)
(iii) उस समय कवि की आयु 31 वर्ष (1574) हो गई थी | रामनवमी का दिन था और कवि आयोध्या में थे |
(iv) रचना पूर्ण तिथि 1633 (विक्रम संवत कैलेण्डर (हिंदु कैलेण्डर) के अनुसार
(v) दिन/महिना अगहन शुक्ल पंचमी राम-सीता विवाह तिथि
(vi) रचना को पूर्ण करते समय वे 33 वर्ष (1576) के हो गए थे |
(vii) ये रचना 2 वर्ष 7 महिना 26 दिन में पूर्ण हुई ।

महत्वपूर्ण जानकारी_

1. गोस्वामी तुलसीदास हिन्दी के शीर्षस्थ जातीय महाकवि है।

2. गोस्वामी तुलसीदास हिन्दी के मध्यकालीन भक्तिकाव्य की सगुण भक्तिधारा की रामभक्ति शाखा के प्रधान कवि है।

3. रामकथा को लेकर लिखे गए काव्यों में आदिकवि वाल्मीकि की 'रामायण' के बाद तुलसीदास रचित 'रामचरितमानस' ही सर्वाधिक सफल, लोकप्रिय एवं उत्कृष्ट कृति है।

4. इसलिए गोस्वामी तुलसीदास को वाल्मीकि का अवतार कहा जाता है।

"कलि कुटिलजीव निस्तार हित वाल्मीकि तुलसी भयो"

Text ATM Classes Since-2017

अर्थ - यह पंक्ति नाभादास द्वारा लिखा गया है वे कहते हैं कि वाल्मीकि ने इस कलियुग में लोगो को मोक्ष प्राप्त कराने के लिए तुलसीदास के रूप में अवतार लिये हैं।

5. गोस्वामी जी का जीवन अत्यंत यातना और संघर्ष में गुजरा था। बचपन में ही अनाथ होकर भिक्षाटन करते हुए वे साधुओं की मंडली से जा मिले और देशाटन करते रहे।

6. स्वामी रामानंद तुलसीदास के गुरु थे जो उनके लिए शिक्षा व दीक्षा का व्यवस्था किये थे।

7. गोस्वामी जी का विवाह युवावस्था में में हो गया था।

8. गोस्वामी जी कथावाचन की वृति से अपनी गृहस्थी चलाते थे।

9. वे शीघ्र ही गृहस्थ जीवन का परित्याग करके विरक्त साधु जीवन जीने लगे थे ।

10. गोस्वामी जी की संवेदना गहन और अपरिमित थी ।

11. गोस्वामी जी ने अपने युग की प्रमुख साहित्यिक भाषाओं में अवधी एवं ब्रजभाषा को अपनाया |

12. रामचरितमानस अवधी भाषा में रचित है।

13. गोस्वामी जी प्रबंध रचना के लिए अवधि तथा गीतिकाव्य की रचना के लिए ब्रजभाषा अपनाते थे।

14. उन्होने अपने युग की दो महान कृतियाँ रामचरितमानस और विनय पत्रिका की रचना की।

15. एक भक्तकवि और संत होते हुए भी उन्हे एक महान 'लोकनायक' की प्रतिष्ठा प्राप्त है।

16. तुलसीदास रामानंद संप्रदाय के अनुयायी थे ।
17. नरहरी दास शुकर क्षेत्र के वासी थे।
18. गोस्वामी तुलसीदास हिंदी के स्वच्छंद महाकवि है
19. तुलसीदास का स्थाई निवास स्थान काशी है।
20. तुलसीदास को हिंदी का समन्वयवादी कवि कहा जाता है।
21. रामचरितमानस तुलसीदास का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य है।
22. तुलसीदास काशी में 15 वर्षों तक विद्या अध्ययन किए।
23. तुलसीदास राम काव्य धारा के कवि हैं ।
24. यह पाठ उनकी रचना विनय पद से ली गई है।
25. तुलसी अपना पेट राम नाम लेकर भरते हैं ।
26. तुलसी स्वयं को महा तिरस्कृत भिखारी मानते हैं।
27. तुलसीदास भक्ति काल के कवि थे।
28. रामचरित्र मानस सभी भाषा में तथा विनय पत्रिका ब्रज भाषा में लिखी है।
29. भक्ति रस रामचरितमानस का प्रधान रस है।
30. रामचरितमानस एक महाकाव्य है।

प्रथम पद

कबहुँक अंब अवसर पाइ।
मेरिओ सुधि घाइबी कछु करून-कथा चलाई।।
अर्थ- हे हे माँ सीते कभी उचित अवसर पाकर मेरे प्रभु श्रीराम को मेरी याद दिला देना और मेरी करूणा भरी कथा जरुर तथा सुना देना।

दीन, सब अँगहीन, छीन, मलीन, अधी अघाइ। नाम लै भरै उदर एक प्रभु-दासी दास कहाइ।।

अर्थ- मैं सब प्रकार से गरीब हूँ, अँगहीन हूँ, दुर्बल हूँ, मलीन हूँ और पापीयों का पापी हूँ। प्रभु का नाम लेकर पेट भरता हूँ। और प्रभु की दासी (सीता) का दास हूँ।

बूझिहैं 'सो है कौन' कहिबी नाम दसा जनाइ। सुनत रमकृपालु के मेरी बिगारिऔ बनि जाइ ।।

अर्थ- हे माते! मेरी सारी दशा को बताते हुए मेरा नाम भी बता देना। जब कृपालु राम मेरी दासतान सुनेंगे तो मेरी बिगड़ी भी बन जाएगी।

जानकी जगजननि जन की किए बचन-सहाइ । तरै तुलसीदास भव तव-नाथ-गुन-गन गाइ।।

अर्थ- हे माता जानकी जगत की जननी आपको अपने जग के वासियों की सहायता करनी चाहिए, यही मेरी कामना है आपसे मै तो भव सागर प्रभु के नाम लेकर, गुण गान करके तर जाऊगाँ।

द्वितीय पद

द्वार हीं भोर ही को आजु । रटत रिरिहा आरि और न कौर ही तें काजु ।।

अर्थ- हे प्रभु! आज प्रातः काल से ही आपके द्वार पर अड़कर बैठा हूँ। में गिरगिराकर भिक्षुक की भांति भोजन रूप में आपके दर्शन के लिए ललायित हूँ। मुझे और कुछ नहीं चाहिए।

कलि कराल दुकाल दारून, सब कुभांति कुसांजु । नीच जन, मन ऊँच, जैसी कोढ़ में की खाजु ॥

अर्थ- हे प्रभु! कलियुग में भीषण अकाल पड़ चुका है। सभी दुर्गति ग्रस्त दिखाई दे रहा है। मनुष्य अधर्मी होकर भी बड़े -ठाट से रह रहे है मानो कोढ़ में खाज हो गई है।

हहरि हिय में सढय बूझयो जाइ साधु समाजु ।। मोहुसे कहुँ कतहुँ कोउ, तिन्ह कहयो कोसलराजु ।।

अर्थ- हे प्रभु! मैं हृदय से भयभीत होकर दयाशील साधु जनों से इसका उपाय पूछा कि मेरे जैसे पापी के लिए कोई शरण है तो उन्होंनें राम जी नाम बताया। अर्थात राम नाम का जप।

दीनता-दारिद दलै को कृपावारिधि बाजु ।
दानि को दसरथरायके, तू बानइत सिरताजु ।।

अर्थ- लोगों की व दरिद्रता मिटाने के लिए कृपा सिन्धु श्रीराम तत्पर रहेंगे, है दशरथ पुत्र श्रीराम आप भक्त शिरोयणि हैं।

जनमको भूखो भिखारी हीं गरीबनिवाजु।
पेट भरि तुलसिहि जेंवाइय भगति-सुधा सुनाजु ।।

अर्थ- मै जन्म से भूखा व भिखाड़ी हूँ और आप तो दीनदयालू हैं। तुलसीदास जैसा भूखा भक्त हार पर बैठा है, उसे आप भक्ति सुधा भोजन अचमन कराइए प्रभु ।

वस्तुनिष्ट प्रश्न

1. तुलसी का जन्म कब माना जाता है ? - 1543
2. तुलसीदास का बचपन का नाम क्या था?-रामबोला
3. शूकर क्षेत्र के वासी कौन थे - नरहरिदास
4. तुलसीदास की पत्नी का क्या नाम था ? (BSEB, 2020) - रत्नावली
5. गोस्वामी तुलसीदास हिन्दी के कैसे महाकवि (BSEB, 2022) - स्वच्छन्द महाकवि
6. गीतावली किसकी रचना है?(2022 BSEB)- तुलसीदास
07. तुलसीदास का स्थायी निवास-स्थान कहाँ था ? (2024 BSEB) - काशी

08. 'नाम लै भरै उदर एक प्रभु-दासी-दास कहाइ।'- यह पंक्ति किस शीर्षक कविता से है? [2023A]
तुलसीदास के पद

09. हिन्दी का समन्वयवादी कवि किसे माना जाता है? [2023A]
तुलसीदास को

10. तुलसीदास का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य कौन है? [2023A]
रामचरित्र मानस

11. 'तुलसीदास' की माता का क्या नाम था? [2020A] -हुलसी

ATM Classes Since-2017

12. काशी में कितने वर्ष रहकर तुलसीदास विद्याध्ययन किए? [2021A] -15 वर्षों तक

13. इनमें से कौन-सी पुस्तक तुलसी की नहीं है ?
(A) रामलला नहछू
(B) बरबै रामायण
(C) जानकी मंगल
(D) हनुमान मंगल
14. गोस्वामी जी किस काव्यधारा के कवि थे ?
-राम काव्यधारा
15. तुलसी अपना पेट कैसे भरते है - राम नाम लेकर
16. तुलसी ने अपने को किस प्रकार का भिखारी माना है ? - महा तिरस्कृत
17. तुलसीदास कैसे कवि माने जाते हैं ? (BSEB, 2019) - समन्वयवादी
18. 'बरवै रामायण' किसकी रचना है ? (BSEB, 2021) - तुलसीदास
19. 'कबहुँक अम्ब अवसर पाई।' यहाँ अम्ब सम्बोधन किसके लिए है ? - सीता
20. पाठ्य-पुस्तक में संकलित तुलसी के पद तुलसीदास की किस कृति से लिए गए हैं। - विनय के पद
21. तुलसीदास किस काल के कवि थे ? - भक्तिकाल
22. हनुमान बाहुक' रचना कितने छंदों की है? [2022A] - 44
23. तुलसीदास के शिक्षा गुरु थे- शेष सनातन
24. इनमें से कौन-सी रचना तुलसी की है ?-विनयपत्रिका
25. कौन-सी कृति तुलसी रचित है ? -रामचरितमानस
26. किस कवि का मूल नाम 'रामबोला' था ? (BSEB, 20) - तुलसीदास का
27. 'मानस' (रामचरितमानस) का रचना समय क्या है ?- संवत 1631
28. 'रामचरितमानस' की भाषा है-अवधी
29. 'विनयपत्रिका' की भाषा है- अंतर्वेदी (ब्रजभाषा)
30. तुलसीदास का जन्म। था ?- राजापुर (बाँदा, उत्तर प्रदेश)
31. 'हनुमानबाहुक' को तुलसीदास की किस कृति का एक अंग माना जाता है ? - कवितावली
32. रामचरितमानस का प्रधान रस है-भक्ति रस
33. निम्नलिखित में 'रामचरितमानस' क्या है ? -
-महाकाव्य
34. इनमें से कौन सी रचना तुलसी की नहीं है ?
(A) कवितावली
(B) बरवै रामायण
(C) गीतावली
(D) राधा-स्तुति
35. तुलसीदास ने अपने युग की किन दो साहित्यिक भाषाओं को अपनाया? [2021A]-अवधी और ब्रज
36. तुलसीदास के दीक्षा गुरु कौन थे? [2022A]
- नरहरिदास
37. निम्न में कौन रचना तुलसीदास की है? [2022A]
(A) शिवा बावनी
(B) मसलानामा
(C) लहर
(D) दोहावली

लघु उत्तरीय प्रश्न- 2 अंक
1. तुलसी सीता से कैसी सहायता मांगते हैं? [2019, 2020, 2024]

उत्तर :- तुलसीदास माता सीता से विनती करते हैं कि हे माते कभी अवसर पाकर मेरी करुणा भरी कथा प्रभु को जरुर सुना देना ताकि मुझे इस भव सागर से पार निकाले ।

2. तुलसी को किस वस्तु की भूख है? [2018]

उत्तर :- तुलसी को प्रभु श्रीराम की भक्ति की भूख थी। वह भक्ति सुधा पान करके तृप्त होना चाहते थे ।

3. तुलसी अपनी बात सीधे राम से न कहकर सीता से क्यों कहलवाना चाहते हैं?

उत्तर :- तुलसीदास संकोची स्वभाव के थे। उन्हें अपनी बात राम से कहने की हिम्मत नहीं थी जितनी माता सीता से कहने की थी। वे जानते थे प्रभु श्री राम माता जानकी की बात नहीं टालेंगे।

4. तुलसी के ह्रदय में किसका डर है? [2023]

उत्तर :- तुलसीदास के ह्रदय में कलयुग में पड़ने वाले भीषण अकाल का डर था। वे जानते थे कि कलयुग में बहुत कष्ट होगा। अतः वे प्रभु के शरण में आ गए।

5. हिंदी की श्रेष्ठतम महाकाव्य कौन सा है? 2019

उत्तर :- हिंदी की श्रेष्ठतम महाकाव्य तुलसीदास रचित रामचरितमानस है।

6. तुलसी ने अंब कहकर किसको संबोधित किया और क्यो ? [2018]

उत्तर :- तुलसी ने अंब कहकर माता सीता को सबोधित किया है क्योकि वह अपनी करुणा भरी कथा माता जानकी द्वारा प्रभु श्री राम तक पहुंचाना चाहते थे। तुलसी आजीवन राम भक्त बनकर रहना चाहते थे।

7. तुलसी ने किन-किन दुर्गुणों का बखान किया ?

उत्तर :- तुलसी ने स्वयं को बहुत गरीब, भूखा, कमजोर, पापी, दुर्जन, मलिन, भिखारी नीच, पेटू, लोभी आदि कहा

8. तुलसीदास के दोनों पद में किस रस की व्यंजना है ?

उत्तर :- तुलसीदास रचित पद के कविता के दोनों पद में शांतमिश्रित करुणरस की व्यंजना है।

9. रटत रिरिहा आरि और न, कौर ही तें काजु। यहां 'और' का क्या अर्थ हैं ?

उत्तर :- यहां 'और' का अर्थ है मात्र इतना ही, इससे ज्यादा नहीं वह गिरगिड़ाकर कौर के टुकड़े मांग रहे हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न- 5 अंक

1. पठित पदों के आधार पर तुलसी की भक्ति-भावना का परिचय दीजिए। [2020]

उत्तर- रामचरित मानस के रचयिता महकवि तुलसीदास ने दीन दयाल प्रभु श्रीराम के आगे स्वयं को दीनहीन बताया है। तुलसीदास अपनी दशा का वर्णन माता सीता द्वारा करवाते है। और कहते है मेरे प्रभु तो दीन बंधु है, दीनो पर दया करना ही उनका चरित्र है। मुझे विश्वास है कि मेरे प्रभु मुझे इस भवसागर से जरुर पार कर देंगे। एवं सारी पीड़ाओं को दूर कर देंगे।

2. प्रथम पद का भावार्थ लिखें।
उत्तर- तुलसीदास राम भक्तिधारा के सर्वश्रेष्ठ कवि है। इस पद में तुलसीदास अपनी बात प्रभु श्रीराम से स्वयं न कहकर माता जानकी से वीनती करके कहलवाते हैं। कवि कहते है, है माते ! उचित अवसर पाकर मेरी करूणा भरी कथा सुना देना। कि मैं गरीब हूं, अंगहीन हू, मलीन हूँ पापी भी हूँ और उन्हीं का नाम लेकर पेट पेट भरता हूँ। प्रभु मुझे इस भवसागर से पार जरूर उतारेंगे।

3. द्वितीय पद का भावार्थ लिखें।

उत्तर- प्रस्तुत पद महाकवि तुलसीदास द्वारा रचित पद शीर्षक कविता से लिया गया है जिसमें कवि ने श्रीराम के प्रति अपनी भक्ति भावना का चित्रण किया है। कवि सक्ति भोग का भूखा है। सुबह से ही आपके द्वार पर आकर बैठा हूँ। आपके दर्शन के शिवाय मुझे कुछ नहीं चाहिए। कलयुग में भीषण आकाल पड़ चुका है साधु-जनो से इसका उपाय पूछा तो आप ही का नाम बताया है। आप तो भक्त शिरोमणि से मेरी भक्ति सुधा जरूर मिटा देंगे।

सप्रसंग व्याख्यात्मक प्रश्न- 4 अंक

1. दीन सब अंग हीन, छोन, मलीन, अधी, अधाई।
या
नाम लै भरै उदर एक प्रभु-दासी दास कहाई।। [2015, 2024]

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति महाकवि तुलसीदास द्वारा रचित पद शीर्षक कविता से लिया गया है। तुलसीदास राम भक्तिधारा के कवि हैं। इस पंक्ति के माध्यम से कवि का कहना है कि मैं सब प्रकार से गरीब हूँ,अंगहीन हूँ दुर्बल हूँ, मलिन हूँ और पापियों का पापी हूँ। प्रभु का नाम ले कर पेट भरता हूं और प्रभु की दासी (सीता) का भी दास हूँ।

2. कलि कराल दुकाल दारून, सब कुभाँति कुसाजु । नीच जन, मन ऊँच, जैसी कोढ़ में की खाजु ।।

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति महाकवि तुलसीदास है द्वारा रचित पद शीर्षक कविता से लिया गया है। जिसमें कवि का कहना है कि हे प्रभु! कलियुग में भीषण अकाल पड़ चुका है सभी दुर्गति ग्रस्त दिखाई दे रहे हैं। प्राणी अधर्मी होते छए भी बड़े ठाट से रह रहे है मानो जैसे कोढ़ में खाज हो गई हो।

3. पेट भरि तुलसिहि जेवाइय भगति-सुधा सुनाजु ।

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति महाकवि तुलसीदास द्वारा रचित पद शीर्षक कविता से लिया गया है। इस पंक्ति के माध्यम से कवि का कहना है कि में जन्म से भक्ति भोग का भूखा हूँ में जैसे ही और भी भक्त प्रभु आपके द्वार पर आकर बैठे हैं। प्रभु उसे आप भक्ति सुधा भोजन अचमन कराइए।

Chapter_ 04
छप्पय

कवि का परिचय :-

कवि - नाभादास
मूल नाम- नारायण दास
जन्म- 1570 (अनुमानित)
जन्म-स्थान- दक्षिण भारत
निधन- अज्ञात (1600 तक वर्तमान)
निधन स्थान- आयोध्या या चित्रकुट (अनुमानित)
शिक्षा- प्रतिपालक गुरु की देख-रेख में स्वध्याय सत्संग द्वारा ज्ञानअर्जन किये।
दीक्षागुरू - स्वामी अग्रदास (अग्रअली)

नोट - 'स्वामी अग्रदास "स्वामी रामानंद के शिष्य थे |
स्थाई निवास- वृंदावन
अभिरुचि - लोकभ्रमण, भगवतभक्ति, काव्य रचना, वैष्णव दर्शन-चिंतन में विशेष रुचि थी।
समकालीन- गोस्वामी तुलसीदास
कृतियाँ- भक्तमाल (रचनाकाल 1585-1596)
अष्टयाम

(i) यह ब्रजभाषा गद्य रुप में लिखित है।

(ii) यह रामचरितमानस की दोहा-चौपाई शैली में लिखित है।

महत्वपूर्ण जानकारी

(1) जब नाभादास शैशव अवस्था में थे तभी उनके पिताजी की मृत्यु हो गई।

(2) घर में अकाल पड़ने के कारण नाभादास के माताजी उन्हें लेकर जयपुर राजस्थान आ गई।

(3) दुर्भाग्यवश वे अपने माताजी से भी बिछोह गए।

(4) नाभादास सगुणोपासक रामभक्त कवि थे।

(5) नाभादास गोस्वामी तुलसीदास के समकालीन थे।

(6) नाभादास एक सच्चे वैष्णव थे।

(7) नाभादास की सबसे अधिक जगत प्रसिद्ध कृति भक्तमाल है।

(8) भक्तमाल का अर्थ है- "भक्त चरित्रों की माला"। जिसमें नाभादास के पूर्ववर्ती और समवर्ती वैष्णव भक्तों के चरित वर्णित है।

(9) विद्वानों के मुताबिक नाभादास दलित वर्ग के थे।

(10) संपूर्ण 'भक्तमाल' छप्पय छंद में निबद्ध है।

(11) छप्पय एक छंद है जो छः पंक्तियों का गेय पद होता है।

(12) इसमें 316 छप्पयों में 200 भक्तों के चरित वर्णित है।

(13) यहाँ कबीर और सूरदास पर लिखे गए छप्पय 'भक्तमाल' से संकलित है।

कबीर

भगति विमुख जे धर्म सो, सब अधर्म करि गए।
योग यज व्रत दान भजन बिनु तुच्छ दिखाए।।

अर्थ- बिना भक्ति के धर्म भी अधर्म के समान है। योग, यज्ञ, व्रत, दान सभी भजन बिना तुच्छ के समान है।

हिन्दू तुरक प्रमान रमैनी सबदी साखी।
पक्षपात नंहिं बचन सबहिके हितकी भाषी ।।

अर्थ- कबीर जी ने कभी किसी के साथ पक्षपात नहीं कियें हैं। उनके वचन व भाषा सर्वदा सभी के हित में होती है चाहे वह हिन्दु हो या मुस्लिम इसका साक्ष्य रमैनी और सबदी जैसी ग्रंथों में मिलती है।

आरूढ़ दशा है जगत पै मुख देखी नाहीं भानी।
कबीर कानि राखी नहीं वर्णाश्रम षट दर्शनी।

अर्थ - संसार के सभी लोगों की एक ही दशा है कि वह मुख देखकर ही अच्छा-बुरा कहते है। पर कबीर कभी ऐसा नहीं कहा और ना हीं कभी सुनि-सुनाई बातो पर विश्वास किया। उन्होनें तो चार वर्ण, चार आश्रय और छः दर्शनों को भी महत्व नही दिया।

चार वर्ण- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र।

चार आश्रय- ब्राह्मचर्य, गृहस्थ, वनप्रस्थ और सन्यास ।

छः दर्शन- सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदांत ।

सूरदास

उक्ति चौज अनुप्रास वर्ण अस्थिति अतिभारी।
वचन प्रीति निर्वही अर्थ अद्भुत तुकधारी ।।

अर्थ- सूरदास की रचनाएँ सभी युक्ति, चमत्कार और अनुप्रास वर्ण के स्थिति से भरी है। उनके वचन और वाणी प्रेम से भरी है उनके अर्थ अद्भूत है और एक तुक को धारण किए हुए हैं।

अनुप्रास वर्ण- जिस पंक्ति में वर्ण या वर्णों का समुह बार-बार आता है उसे अनुप्रास कहते है।

प्रतिबिंबित दिवि दृष्टि हृदय हरि लीला भासी। जन्म कर्म गुन रूप सबहि रसना परकासी ।।

अर्थ- सूरदास ने अपने दिव्य दृष्टि से अपने हृदय में हरि का एक प्रतिबिंब बनाया है और उनके लीला का वर्णन किया है उन्होने श्रीकृष्ण के जन्म, कर्म, गुण और रूप का वर्णन अपने वचनों द्वारा अपने कविताओं में किये है।

विमल बुद्धि हो तासुकी, जो यह गुन श्रवननि धैरै। सूर कवित सुनि कौन कवि, जो नहिं शिरचालन करै ।।

अर्थ- जो सूरदास की रचनाओं को उनके गुणों को अपने कानों से सुनता है उसकी बुद्धि निर्मल हो जाती है। उनकी कविताओं को सुनकर कोई भी गलत नहीं कह सकता सभी अपना सिर हाँ में हिलातें हैं।

ATM Classes Since-2017

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न 5 अंक

1. 'छप्पय' कविता का सारांश लिखें। 2016

उत्तर- 'छप्पय' कविता नाभादास के द्वारा रचित है। नाभादास सगुण उपासक रामभक्त कवि थे उनकी भक्ति राम भक्ति से थोड़ी भिन्न थी। क्योंकि उनमें मर्यादा के स्थान पर माधुर्यमाव का पुट भरा था। नाभादास एक सूफी कवि थे। इस कविता में दो छप्पय हैं जो कबीर और सूरदास पर लिखे गए हैं इसे भक्तमाल से लिया गया ॥ है। है। भक्तमाल भक्तमाल का अर्थ है - "भक्त चरित्रों की माला"। छप्पय एक छंद है जो छः पंक्तियों का गेय पद होता है।

प्रथम छप्पय में कहा गया है कि बिना भक्ति के धर्म भी अधर्म के समान है। योग, यज्ञ, व्रत, दान सभी भजन के बिना व्यर्थ है। कबीर जी ने कभी किसी के साथ पक्षपात नहीं कियें चाहे वह हिन्दु हो या मुस्लिम। उन्होने कभी सुनी-सुनाई बातों पर विश्वास नहीं किया। उन्होने तो चार वर्ण, चार आश्रय और छः दर्शनों को भी महत्व नहीं दिया।

द्वितीय छप्पय में कहा गया है कि सूरदास की रचनाएँ युक्ति, चमत्कार और अनुप्रास वर्ण से भरी पुरी है। उनका वचन और वाणी प्रेम रस से भरी होती है। उन्होनें श्रीकृष्ण के जन्म, कर्म, गुण, रूप आदि का वर्णन अपने कविताओं में किये हैं। उनकी कविता को सुनकर सभी आनन्दित हो जाते हैं।

सप्रसंग व्याख्यात्मक प्रश्न - 4 अंक

1. सूर कवित सुनि कौन कवि, जो नहीं शिरचालन करें।

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति नाभादास रचित 'छप्पय' शीर्षक कविता से लिया गया है। जो भक्तमाल से संकलित है। छप्पय एक छन्द है जो छः पक्तियों का गेय पद होता है। इस पंक्ति के माध्यम से कवि का कहना है कि जो सूरदास के कविताओं को और उनके गुणों को सुनता है वह कभी भी सूर के बारे में गलत नहीं कहता बल्कि सभी अपना सिर झुकाकर हाँ भरते है उन्हे नमन करते हैं।

2. भगति विमुख जे धर्म सो सब अधर्म करि गाए। [2012, 2021,2023]

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति नाभादास रचित 'छप्पय' शीर्षक कविता से लिया गया है। जो भक्तमाल से संकलित है। छप्पय एक छन्द है जो छः पंक्तियों का गेय पद होता है। इस पंक्ति के माध्यम से कवि का कहना है "बिना भक्ति के धर्म भी अधर्म के समान है। योग, यज्ञ, व्रत, दान सब भजन के बिना तुच्छ है।

लघु उत्तरीय प्रश्न 2 अंक

1. नाभादास ने, छप्पय में कबीर के किन विशेषताओं का उल्लेख किया है? 2011, 2018, 2022

उत्तर- नाभादास ने अपने छप्पय में कबीर के उन विशेषताओं का उल्लेख किया है जो सभी धर्मो के लोगों के हित में है। चाहे वह हिन्दु हो या मुस्लिम कबीर जी ने कभी भी किसी के साथ पक्षपात बाते नहीं किये वे मूंह देखी और सुनी-सुनाई बातों पर विश्वास नहीं कियें। सदा लोगों के कल्याण की बाते की।

2. 'मुख देखी नाहीं भनी' का क्या अर्थ है? कबीर पर यह कैसे लागू होता है?

उत्तर- नाभादास जी अपने छप्पय कविता में कबीर जी के बारे में कहते है कि उन्होने कभी भी मुँह देखी और सुनी-सुनाई बातों पर विश्वास नहीं किया। वे सदा लोगों के हित जनक बाते कहें हैं।

3. सूर के काव्य की किन विशेषताओं का उल्लेख कवि ने किया है ?

उत्तर- नाभादास जी ने अपने 'छप्पय' कविता में सूरदास जी के उन विशेषताओं का उल्लेख किया है जिसे सुनकर और पढ़कर हम सभी उन्हे नमन करेंगे। नाभादास कहते है कि सूर के रचनाओं में युक्ति चमत्कार और प्रेम रस भरा होता है। जो सभी पाठक को आनन्दित कर देता है।

4. 'पक्षपात नहीं वचन सबहि के हित की भाषी?' इस पंक्ति में कबीर के किस गुण का परिचय दिया गया है?

उत्तर- नाभादास जी इस पंक्ति के माध्यम से कबीर जी के बारे में परिचय देते हुए कहते हैं कि कबीर कभी किसी के साथ पक्षपात नही कियें। उनके वचन और भाषा सभी धर्मो के लोगों के हित में होते है। वे सदा सभी लोगों का कल्याण चाहते हैं।

5. कविता में तुक का क्या महत्व है? इन छप्पयों के संदर्भ मे स्पष्ट करें

उत्तर- तुक का तात्पर्य समान वर्ण अथवा समान ध्वनि का अन्त में प्रयोग से होता है। अर्थात कबीर की कविताओं की पंक्तियाँ लययुक्त होती है जिसे सुनने में एवं पढ़ने में बहुत आनंद आता है।

6. 'कबीर कानि राखी नहीं' से क्या तात्पर्य है?

उत्तर- इस पंक्ति का तात्पर्य यह है कि कबीर जी किसी के सुनी-सुनाई बातों पर विश्वास नहीं करते हैं। हैं। उन्होने तो वर्णाक्ष वर्णाश्रम को भी नहीं माना है।

7. कबीर ने भक्ति को कितना महत्व । महत्व दिया?

उत्तर- कबीर ने भक्ति को अत्यधिक महत्व दिया है। भक्ति के बिना सारे धर्मों को अधर्म माना है। अर्थात् भक्ति ही जीवन का सार है।

वस्तुनिष्ट प्रश्न

1. नाभादास की ब्रज भाषा गद्य की रचना कौन-सी है ?
-अष्टयाम
2. नाभादास की पारिवारिक पृष्ठभूमि किस वर्ण की थी ?
- दलित
3. नाभादास का काव्य रचना क्षेत्र था ? -वृन्दावन
4. सूर की भक्ति किस कोटि की थी ? - सख्य भाव
5. कबीर के अनुसार अधर्म करने वाले व्यक्ति कौन होते हैं ? - भक्ति विहीन
6. नाभादास ने सूरदास को किस क्षेत्र में अद्भुत कहा है - तुकधारी
7. भक्त-चरित्रों की माला है- भक्तमाल
8. सूर कवित्त को सुनकर ऐसा कौन कवि है जो क्या नहीं करता ? (BSEB, 2021)
शिरचालन नहीं करता
9. कबीरदास किस शाखा के कवि हैं ?
निर्गुण शाखा के
10. 'भक्तमाल' किसकी रचना है ?
नाभादास
11. नाभादास के दीक्षा गुरु कौन थे ?
स्वामी अग्रदास
12. नाभादास किसके समकालीन थे? (BSEB, 2022)
तुलसीदास
13. नाभादास किस धारा के कवि थे ?
सगुणोपासक रामभक्त धारा के
14. नाभादास जी किस धारा के संत थे? [2021A]. - वैष्णव दर्शन के
15. 'छप्पय' शीर्षक पाठ के रचयिता हैं- (BSEB, 2016). - नाभादास
16. कवि नाभादास ने ज्ञानार्जन कैसे किया? [2025A] - सत्संग द्वारा
17. नाभादास किस काल के कवि थे ? भक्तिकाल के
18. 'कानि' का अर्थ होता है-विश्वास , प्रतीति
19. नाभादास किसके शिष्य थे ?- स्वामी अग्रदास के
20. पाठ के अनुसार सबके हित का वचन कौन कहता है ? -कबीर

ATM Classes Since-2017

21. आपकी पाठ्य-पुस्तक में नाभादास की कविता किन दो कवियों के बारे में है? (BSEB, 2018) - कबीर एवं सूरदास

22. निम्नांकित में से कौन-से कवि निरक्षर थे ? (BSEB,2019)
(A) कबीरदास (B) सुमित्रानन्दन पन्त
(C) विद्यापति (D) नागार्जुन

23. नाभादास की 'रामभक्ति' मर्यादा के स्थान पर [2021A]- माधुर्यभाव का पुट था

24. विमल बुद्धि हो तासुकी, जो यह गुन श्रवननि धरै - यह पंक्ति किस शीर्षक कविता से है? [2022A] -छप्पय

25. छह पंक्तियों के गेय पद को क्या कहते हैं? [2025A] - छप्पय

26. "आरूढ़ दशा है जगत पै, भुख देखी नाहीं भनी"-यह पंक्ति किस कविता की है? [2025A] छप्पय (कबीर)

27. 'छप्पय' क्या है? [2024A] - छंद

Chapter_05

कवित

कवि का परिचय :-

कवि - भूषण
जन्म - 1613 ई०
जन्म-स्थान- तिकवाँपुर, कानपुर, उत्तर प्रदेश
निधन- 1715 ई.
निधन स्थान- कानपुर (स्पष्ट नही है)
उपनाम - भूषण (चित्रकूट के सोलंकी राजा रुद्रसाह ने इन्हें 'कवि भूषण' की उपाधि दी जो इतना प्रसिद्ध हुआ कि मूलनाम बन गया)।
माता- नंदकुंवरि
पिता- रत्नाकर त्रिपाठी
प्रमुख आश्रयदाता -

(i) छत्रपति शिवाजी महाराज

(ii) शिवाजी के पुत्र शाहूजी

(iii) पन्ना के बुंदेला राजा छत्रसाल

⇒ विशेष - भूषण जी को "रीतिकाल के प्रसिद्ध कवि चिंतामणी त्रिपाठी और मतिराम भूषण के भाई के रूप में जाने जाते हैं"

⇒ कृतियाँ - प्रमुख काव्य ग्रंथ

(1) शिवराज भूषण (384 छंदों में 105 अलंकारों का निरूपण और छत्रपति शिवाजी की बीरता और पराक्रम का वर्णन है।

(2) शिवा बावनी (52) मुक्तकों (छन्द) में में छत्रपति शिवाजी की वीरता का वर्णन है। है।)

(3) छत्रसाल दशक (10) छन्दों में महराज छत्रसाल की वीरता के यशोगान का वर्णन है।

Note- ये तीनों कृतियाँ उपलब्ध नहीं है।

अन्य रचनाएँ -
(i) भूषण हजारा
(iii) दूषण उल्लास
(ii) भूषण उल्लास
(iv) स्फुट पद्य

महत्वपूर्ण जानकारी-

(1) भूषण हिन्दी कविता में रीतिकाल के एक प्रसिद्ध कवि हैं।

(2) भूषण को स्वाभिमान, आत्मगौरव, शौर्य एवं पराक्रम के कवि कहा गया है।

(3) भूषण को वीर रस के महान कवि कहा गया है।

(4) भूषण ने मुक्तक शैली में में छत्रपति शिवाजी और बुंदेला वीर राजा छत्रसाल की वास्तविकता पर आधारित विरुदावलियाँ गाई है।

(5) चिंतामणि त्रिपाठी और मतिराम भूषण भाई थे | नभूषण दोनों भूषण जी के

(6) रीतिकाल में कवियों को "आचार्य कवि" या रीतिबद्ध कवि" कहा जाता था।

(7) भूषण जी एक रीतिबद्ध आचार्य कवि ही थे, किन्तु अलंकार-निरूपण करते हुए उनका आचार्य रूप बहुत सफलता नहीं प्राप्त कर सका।

(8) रीतिकाल में श्रृंगार रस की प्रधानता थी।

(9) परन्तु भूषण ने इस प्रवृति-भाव से अलग हटकर वीर रस को प्रमुखता दियें।

(10) श्री रामविलास शर्मा की मान्यता यह है कि उन्होनें कविता की भाषा तो ब्रजभाषा ही रखें, परन्तु उसमें शब्द, मुहावरे और रचना शिल्प बहुत प्रभावी है।

(11) भूषण जी छत्रसाल और शिवाजी के दरबारी कवि थे।

(12) यहाँ भूषण के दोनों प्रिय नायकों- छत्रपति शिवाजी और छत्रसाल से संबंधित दो कवित प्रस्तुत है, जिसमें उनके शौर्य के ओजस्वी बखान है।

(13) भूषण की रचना 'शिवराज भूषण' में 384 छन्द और 105 अलंकारों का निरूपण है।

(14) शिवा बावनी में छत्रपति शिवाजी की वीरता का बखान है।

(15) भूषण की रचना 'शिवा बावनी' में 52 मुक्तक है।

(16) भूषण की रचना 'छत्रसाल दसक' में 10 छन्द है।

(17) छत्रसाल दशक में महाराज छत्रसाल की वीरता का बखान है।

प्रथम कवित

-प्रथम कवित में वीर रस का वर्णन है।
-प्रथम कवित का स्थायी भाव उत्साह है।
-प्रथम कवित का काव्य गुण ओज है।
-प्रथम कवित में अनुप्रास, उपमा, रूपक एवं उत्प्रेक्षा -अलंकारों का प्रयोग है।
-प्रथम कवित छत्रपति शिवाजी महराज से संबंधित है।

इंद्र जिमि जंम पर बाड़व ज्यौं अंभ पर, रावण संदभ पर रघुकुल राज है।
पौन बारिबाह पर संभु रतिनाह पर, ज्यौं सहस्रबाहु पर राम द्विजराज है।
अर्थ- इस पंक्ति के माध्यम से भूषण जी शिवाजी महराज की वीरता, पराक्रम और शौर्य का बखान करते हुए कहते है कि जिस प्रकार इन्द्र यमराज पर भारी पड़ते हैं, समुद्र की आग जल पर भारी पड़ता है, राम रावण पर भारी पड़ते है, पवन बादलों पर भारी पड़ता है, शिव कामदेव पर भारी पड़ते है, परशुराम सहस्रबाहु पर भारी पड़ते है उसी प्रकार शत्रुदल पर शिवाजी भारी पड़ते है।

दावा द्रुम- दंड पर चीता मृग झुंड पर, भूषण बितुंड पर जैसे मृगराज है।
तेज तम अंस पर कान्ह जिमि कंस पर, यौ मलेच्छ बंस पर सेर शिवराज है।

अर्थ- जिस प्रकार जंगल की आग वृक्षों के लिए काल बन जाती है, चिता हरिणों के झुण्ड पर भारी पड़ता है, सिंह हाथी पर भारी पड़ता है, प्रकाश अंधकार का नाश करती है, कृष्ण कंस पर भारी पड़ते है उसी प्रकार शिवाजी मुराल वंश पर भारी पड़ते हैं।

ATM Classes Since-2017

द्वितीय कवित

-द्वितीय कवित में वीभत्स रस की प्रधानता है।
-द्वितीय कवित का स्थायी भाव भयानक है।
-द्वितीय कवित छत्रसाल से संबंधित है।
-द्वितीय छंद में अनुप्रास अलंकार का प्रयोग है।

निकसत म्यान ते मयूखें, प्रलैं- भानु कैसी, फारै तम-तोम से गयंदन के जाल को।
लागति लपकि कंढ बैरिन के नागिनि सी, रुद्रहि रिझावैं दै दै मुंडन की मान को।
अर्थ- इस पंक्ति के माध्यम से कवि भूषण महाराज छत्रसाल की वीरता और पराक्रम का वर्णन करते हुए कहते है कि छत्रसाल की म्यान से निकली तलवार सूर्य के किरणे के समान है। जिस प्रकार सूर्य की किरणे अंधकार का नाश करती है, उसी प्रकार यह तलवार नागिन के समान शत्रुओं पर प्रहार करती है। ऐसा लग रहा है कि मुंडों की माला चढ़ाकर रूद्र को रिझा रही है।

लाल छितिपाल छत्रसाल महाबाहु बली, कहाँ ली बखान करी तेरी करवाल को ।
प्रतिमट कटक कटीले केते काटि काटि, कालिका सी किलकि कलेऊ देति काल को।
अर्थ- भूषण जी कहते है, हे लाल! पृथ्वी के पालक बाहुबली छत्रसाल आपकी तलवार का वर्णन कैसे करे हम। आपकी तलवार शत्रुओं को इस प्रकार काटती है। है मानो माँ काली को भोजन करा रही है।

दीर्घ दीर्घ उत्तरित प्रश्न 5 अंक -

1. छत्रसाल की तलवार कैसी है? वर्णन कीजिए। 2021,2024,
उत्तर - छत्रसाल की तलवार सूर्य के किरणों के समान है। जिस प्रकार सूर्य की किरणे गहन अंधकार को पल भर में नाश कर देती है। उसी प्रकार यह तलवार नागिन के विष के समान शत्रुओं को मौत के घाट उतार देती है। ऐसा लगता है मानों जैसे गर्दन काटकर माँ काली को भोजन दे रही है। अतः उनकी तलवार की धार बड़ी तीक्ष्ण है।

2. भूषण रीतिकाल की किस धारा के कवि है? वे अन्य रीतिकालीन कवियों से विशिष्ठ कैसे है? 2022
उत्तर - भूषण रीतिकाल की रीतिबद्ध काव्यधारा के कवि थे। वे जातीय स्वाभिमान, आत्मगौरव, शौर्य एवं पराक्रम के कवि हैं। उन्होनें श्रृंगार रस की प्रधानता वाली रीति से हटकर वीर रस को प्रधानता दिये है। इस प्रकार कवि भूषण अन्य रीतिकालीन से विशिष्ट है।

3. कवित शीर्षक कविता का सारांश लिखें। 2016,2024
उत्तर- कवित शीर्षक कविता भूषण जी के द्वारा रचित है।

प्रथम कवित- इस कवित में वीर रस का वर्णन है। जहाँ कवि भूषण शिवाजी महाराज की वीरता, शौर्य और पराक्रम का वर्णन करते हुए कहते हैं कि जिस प्रकार इन्द्र यमराज पर, राम रावण पर, पवन बादल पर, कृष्ण कंस पर, शिव कामदेव पर, चिता हिरण पर, सिंह हाथी पर, और प्रकाश अंधकार पर भारी है, ठीक उसी प्रकार शिवाजी महाराज शत्रुदल (मुगलवंश) पर भारी है।

द्वितीय कवित- इस कवित में वीभत्स रस का वर्णन है। जहाँ कवि भूषण महाराज छत्रसाल की तलवार की तेज का वर्णन करते हुए कहते हैं कि इस तलवार की तेज सूर्य के किरणों के समान है। जिस प्रकार सूर्य की किरणे गहन से गहन अंधकार का नाश करती है, ठीक उसी प्रकार यह तलवार नागिन के बिष के समान शत्रुओं का सिर धर से अलग कर कालि माता को कलेऊ चढ़ाती है।

सप्रसंग व्याख्यात्मक प्रश्न - 4 अंक

1. प्रतिभट कटक कटीले केते काटि काटि, कालिका सी किल कि कलेऊ देति काल को 2011,2022,2025
उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति भूषण रचित कवित शीर्षक कविता से लिया गया है। इस पंक्ति के माध्यम से कवि का कहना है कि छत्रसाल की तलवार शत्रुओं की सेना को इस प्रकार काटती है कि वह काली की कलेऊ (भोजन) बनते जा रही है।

2. लागति लपकि कंठ बैरिन के नागिनि सी, रुद्रहि रिझावे दै दै मुंडन की माल को ।
उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति भूषण रचित कवित शीर्षक कविता से लिया गया है। इस पंक्ति के माध्यम से कवि का कहना है कि छत्रसाल की तीक्ष्ण लपलपाती तलवार शत्रु के गले में तेज गति से नागिन के समान लिपट जाती है और देखते ही देखते उसके सिर को धर से अलग कर देती है। मानो यह गगवान रूद्र को माला चढ़ाकर रिझाने का प्रयतन्न कर रही है।

लघु उत्तरीय प्रश्न – 2 अंक

1. शिवाजी की तुलना भूषण ने मृगराज से क्यों की है? [2013, 2021, 2022, 2024]
उत्तर- शिवाजी की तुलना भूषण ने मृगराज (सिंह) से इसलिए किये हैं, क्योंकि जिस प्रकार सिंह हाथी के मस्तक को फाड़ कर खून पी जाता है, उसी प्रकार शिवाजी भी मुगलों का मस्तक फाड़ने में सक्षम थे।

2. शिवाजी की तुलना भूषम ने किन किन से की है ? (2013,2022)
उत्तर- कवि भूषण ने शिवाजी की तुलना इन्द्र, समुद्र की आग, राम, पवन, शिव, परशुराम, चीता, सिंह और कृष्ण से की है।

वस्तुनिष्ट प्रश्न

1. भूषण का जन्म कब हुआ था? - 1613ई.
2. सहस्त्रबाहु पर किसका आक्रमण हुआ था ? परशुराम का
3. कृष्ण ने किस पर आक्रमण किया था ? -कंस पर
4. इनमें से कौन भूषण का आश्रयदाता था ?
(A) रुद्रसाह (B) जयसिंह
(C) शिवाजी (D) बाबर
5. भूषण को भूषण' उपाधि किसने दी थी ? राजा रुद्रसाह ने
6. छत्रसाल की तलवार किसके जाल को फाड़ रही है ? शत्रुओं के जाल को
7. कवि भूषण का प्रथम कवित्त किस ऐतिहासिक पुरुष से सम्बन्धित है ? -शिवाजी
8. 'छत्रसाल दशक' किसकी रचना है ? -भूषण
9. भूषण किस काल के कवि हैं ? -रीतिकाल
10. 'शिवा बावनी' के कितने मुक्तकों में छत्रपति शिवाजी की वीरता का बखान किया गया है ?- 52
11. शिवाजी की तुलना भूषण ने किससे की
(A) इन्द्र (B) श्रीराम (C) परशुराम (D) इनमें से सभी
12. भूषण के पिता का नाम क्या था?- रत्नाकर त्रिपाठी
13. भूषण की कविता है–कवित्त
14. रत्नाकर त्रिपाठी किस कवि के पिता थे ?-भूषण
15. 'शिवाबावनी' में किसकी वीरता का बखान है? -शिवाजी की
16. 'शिवराजभूषण' किसकी रचना है?-भूषण की
17. शिवाजी के पुत्र का नाम क्या था? - साहू
18. 'शिवा बावनी' में कितने मुक्तक हैं ?- बावन
19. भूषण ने किस रस को प्रमुखता दी ?-वीर रस
20. शिवराज भूषण में कितने अलंकारों का निरूपण हुआ है ?- 105
21. भूषण की कृति नहीं है-
(A) भूषण हजारा (B) भूषण-उल्लास
(C) दूषण उल्लास (D) हर्षोल्लास
22. भूषण के प्रिय नायक हैं- छत्रपति शिवाजी और छत्रसाल
23. 'छत्रसाल दशक' में छन्द हैं-दस
24." तेज तम अंस पर कान्ह जिमि कंस पर, यौं मलेच्छ बंस पर सेर सिवराज है "-यह पंक्ति किस शीर्षक कविता की है ?- कवित्त

ATM Classes Since-2017

Chapter_06

तुमुल कोलाहल कलह में

कवि का परिचय :-
कवि- जयशंकर प्रसाद
जन्म- 1889 (माध शुक्ल दशमी, संवत् 1946)
जन्म-स्थान- वाराणसी
निधन- 15 नवम्बर 1937
निधन-स्थान- वाराणसी (काशी)
माता- प्रभावती देवी
पिता- देवी प्रसाद साहु
पितामह (दादा) - शिवरत्न साहु [सुरती (तंबाकू) बनाने के कारण 'सुंधनी साहु' के नाम से विख्यात हुए।]
शिक्षा-
(i) आठ्वीं तक
(ii) संस्कृत, हिन्दी, फारसी, उर्दू की शिक्षा घर पर नियुक्त शिक्षकों द्वारा हुई।
विशेष-
(i) 12 वर्ष की अवस्था में पिता की मृत्यु हो गई।
(ii) उसके 2 वर्ष बाद माता की भी मृत्यु हो गई।
(iii) परिवार में ग्रहकलह की स्थिति आ गई।
(iv) ज्येष्ठ भ्राता (बड़ा भाई) शंभु रतन की मृत्यु से से घर में संकट की स्थिति उत्पन्न हो गई।
(v) सभी उत्तर दायित्य कंधो पर आ गई ।

रचनाएँ- काव्य संकलन - झरना(1918) , आँसू (1925) , लहर (1933)

अतुकांत रचनाएं - महाराणा का महत्व
करुणालय
प्रेम पथिक
प्रबंध काव्य - कामायनी (1936)
नाटक- कल्याणी परिणय (1912)
प्रायश्चित (1914)
राज्यश्री (1915)
विशाख (1929)
कामना (1927)
जन्मेजय का नागयज्ञ (1926)
स्कंदगुप्त (1926)
एक घुट (1928)
चन्द्रगुप्त (1931)
धुवस्वामिनी (1933)

कथा संग्रह - छाया (1912)
प्रतिध्वनि (1931)
इंद्रजाल (1936)

उपन्यास - कंकाल (1929)
तितली (1934)
इरावती(1940)- यह अपूर्ण है

NOTE-
(1) कलाधर उपनाम से ब्रजभाषा में सवैयों की रचना कियें।

(2) प्रसाद की प्रेरणा से उनके भांजे अंबिका प्रसाद ने इंदु का प्रकाशन 1909 से प्रारंभ किया।

(3) प्रसाद जी की पहली काव्य रचना 'चित्राधार' है। जो ब्रजभाषा में 1918 में प्रकाशित हुई थी।

महत्वपूर्ण जानकरी

(1) जयशंकर प्रसाद छायावाद युग के कवि हैं।
(2) प्रसाद जी एक महान नाटककार, उपन्यासकार, कहानीकार एवं निबंधकार भी हैं।
(3) प्रसाद जी आरंभ में ब्रजभाषा में कविता लिखें हैं। बाद में उन्होनें भाषा-खड़ी बोली हिन्दी अपना लिये।
(4) प्रसाद जी का सर्वश्रेष्ठ रचना कामायनी है। इसे हिंदी का श्रेष्ठतम महाकाव्य थी कहा जाता है।
(5) प्रस्तुत गीत कामायनी महाकाव्य से लिया गया है। इस महाकाव्य की नायिका श्रधा है जो स्वयं कामायनी है।

तुमुल कोलाहल कलह में कवि जयशंकर प्रसाद
तुमुल कोलाहल कलह में मैं हृदय की बात रे मन !
अर्थ - प्रस्तुत पंक्तियाँ छायावाद के प्रमुख कवि जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित महाकाव्य कामायनी से ली गई है। जिसमें श्रद्धा मन को पाकर कहती है कि इस अत्यंत कोलाहल (शोर-शराबा) में मैं हृदय के बात की तरह हूँ।

विकल होकर नित्य चंचल, खोजती जब नींद के पल;
चेतना थक सी रही तब, मैं मलय की वात रे मन !

अर्थ- श्रद्धा पुरुष के जीवन में नारी के महत्व को रेखांकित करती हुई कहती है। पुरुष जब दिनभर की भाग-दौर और मन की चंचलता के कारण थक जाता है और व्याकुल होकर आराम करना चाहता है तो ऐसी स्थिति में श्रद्धा (नारी का हृदय) मलय पर्वत से चलने वाली सुगंधित हवा की तरह शांति और विश्राम देती है। कवि कहना चाहते हैं कि मन चंचल है और मन की चंचलता के कारण शरीर थक कर आराम खोजता है ऐसी स्थिति में व्यक्ति का हृदय ही उसको आराम देता है।

चिर-विषाद विलीन मन की ,इस व्यथा के तिमिर वन की;
मैं उषा सी ज्योति रेखा, कुसुम विकसित प्रात रे मन !

अर्थ- मन अंधकाररूपी दुख के वन में दीर्घ काल के लिए क हुआ है। मैं उसमें सुबह की किरणों की तरह हूँ। मैं इस अंधकार से पूर्ण वन में पुष्प से भरे हुए सुबह के समान हूँ।

जहाँ मरु ज्वाला धधकती, चातकी कन की तरसती; उन्हीं जीवन घाटियों की, मैं सरस बरसात रे मन !

अर्थ- हे मन ! उस धधकते हए मरुस्थल में जहां चातकी पानी के बुंदों के लिए तरसती है। मैं जीवन की घाटी में सरस बरसात की तरह हैं। कवि कहते हैं कि जब मानव जीवन कष्ट की अग्नि में मरुस्थल की तरह धधकता है तब आनंद रूपी बारिश ही उसके चित रूपी चातकी को सुख प्रदान करती है।

पवन की प्राचीर में रुक, जला जीवन जा रहा झुक; इस झुलसते विश्व-वन की, मैं कुसुम ऋतु रात रे मन !

अर्थ- हे मन ! जब जीवन पवन की ऊँची चहार दीवारी बंद होकर झुक जाता है। जब मानव जीवन झुलस जाता है। ऐसी स्थिति में मैं वसंत की रात की तरह हूँ। जो इस झुलसे हुए मन को हरा-भरा कर सकती हूँ।

चिर निराशा नीरधर से, प्रतिच्छायित अश्रु सर में; मधुप मुखर मरंद मुकुलित, मैं सजल जलजात रे मन !

अर्थ- हे मन ! गहरी निराशा के बादलों से घिरे हुए आँसुओं के तालाब में मैं करुणा से भरी हुई कमल के समान हूँ हूँ। जिसपर भौंरे गुंजते रहते है।

लघु उत्तरीय प्रश्नः

1. हृदय की बात का क्या अर्थ है?
उत्तर:- हृदय की बात का तात्पर्य है मन की बात। हृदय में प्रेम, दया, ममता, कोमलता आदि का वास होता है। इन भावनाओं से युक्त बातों को हृदय की बात कहा गया है।

2. बरसात को सरस कहने का क्या तात्पर्य है?
उत्तरः- सरस बरसात का तात्पर्य है भीतर तक सरस कर देने वाली बरसात अर्थात झमाझम वर्षा वरसने को सरस बरसात कहा गया है जिसमें पेड़ पौधे आनन्द से झूमने लगते हैं। गर्मी के कारण जलती धरती में भीतर तक रस संचार हो जाने को सरस बरसात कहा गया है।

3. सजल जलजात का क्या अर्थ है?
उत्तरः- सजल जलजात का अर्थ है रसपूर्ण कमल जो सुन्दर, स्वच्छ और तरोताजा हो, जिस पर भौरे दीवाने हो जाय ।

4. कविता में उपा की किस भूमिका का उल्लेख है?
उत्तर:- कविता में उषा को प्रकाश रूप में देखा गया है। जीवन से हताश-निराश मन में नई आशा संचार करने वाली शक्ति के रूप में उषा का चित्रण किया गया है। यह दुख के अंधकार के बीच सुख के खिले फूल का प्रभात है।

ATM Classes
Since 2017

5. चातकी किसके लिए तरसती है?
उत्तरः- चातकी स्वाति नक्षत्र की एक छोटी सी बूंद के लिए तरसती है। अर्थात जल कण के लिए तरसती है।

6. इस कविता का केन्द्रीय भाव क्या है?
उत्तरः- प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि ने पुरुष के जीवन में नारी के योगदान को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। कर्म संकुल पुरूष के जीवन में झंझावातों का क्रम चलता ही रहता है। नारी उनके तपते मन पर शीतल अवलेप लगाने का काम करती है।

यहाँ श्रद्धा सम्पूर्ण नारी वर्ग का प्रतीक है। नारी पुरुषों की अहलादिका शक्ति होने के साथ-साथ संचालिका वृत्ति भी होती है। नारी जीवन से निराश उदास दुखी मन के लिए सुख-सौंदर्य की प्रतिमूर्ति होती है ।

7. प्रसाद की काव्यगत विशेषताओं का वर्णन करें।
उत्तर:- छायावाद के पुरोधा कवि प्रसाद वास्तव में भारतीय संस्कृति के प्रवक्ता दिखाई पड़ते हैं। उन्होंने दुखमय संसार में जीवन के प्रति आँसू तो बहाया परन्तु झरना और लहर के रूप में जीवन यात्रा करने का संदेश भी दिया। इतना ही नहीं कामायनी के साथ टूटे विखरे जीवन की शुरूआत कर नवनिर्माण पर भी काफी जोर दिया है।

8. जयशंकर प्रसाद किस काव्य-धारा के कवि माने जाते है ?
उत्तर :- जयशंकर प्रसाद छायावादी काव्य-धारा के कवि माने जाते है ।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नः

1. तुमुल कोलाहल कलह में शीर्षक कविता लिखें। का भावार्थ
उत्तरः- "तुमुल कोलाहल कलह में" शीर्षक नाम नामक कविता जयशंकर प्रसाद जी द्वारा रचित है। जिसे कामायनी महाकाव्य से लिया गया है | कोलाहल भरे संसार में हृदय की बात -श्रध्दा और मनु का मधुर मिलन होता है | श्रध्दा हृदय का प्रतीक है | इड़ा बुद्धि का प्रतीक है। और मनु मन का प्रतीक है | यह सनर कोलाहल से भरा हुआ है | यह संसार मरुभूमि की तरह है। निराशा और आंसू इस संसार में भरे हुए है | ऐसी परिस्थिति में नारी ही पुरुष को चैन, सुकून, शांति प्रेम और सुख देती है| श्रध्दा ही मनु को सुख प्रदान करती है।

सप्रसंग व्याख्यात्मक प्रश्न

1. पवन की प्राचीर में रुक जल जीवन जा रहा झुका |
उत्तर :- प्रस्तुत पंक्ति जयशंकर प्रसाद द्वारा रचीत "तुमुल कोलाहल कलह में" शीर्षक कविता से लिया गया है। इस पंक्ति के माध्यम से कवि का कहना है कि जब जीवन पवन की ऊँची चहार दिवारी बंद होकर झुक जाता है | जब मानव जीवन झुलसे आदमी को फूल की तरह खिला देती है।

2. चेतना थक-सी रही, तब मै मलय की बात रे मन |
उत्तर :- प्रस्तुत पंक्ति जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित "तुमुल कोलाहल में" शीर्षक कविता से लिया गया है। इस पंक्ति के माध्यम से कवि का कहना है कि जब पुरुष दिनभर की भाग दौर में थक जाता है तब मन की चंचलता के करण शरीर थककर आराम खोजता है तब व्यक्ति का हृदय ही उसको आराम देता है |

वस्तुनिष्ठ प्रश्नः

1. प्रस्तुत गीत 'तुमुल कोलाहल कलह में' किसने गाया है? -आशा भोंसले
2. इनमें इनमें कौन-सी रचना प्रसाद जी की नहीं है ?
देवदासी
3. 'कामायनी' महाकाव्य में कामायनी कौन है? (BSEB, 2024) - श्रद्धा
4. प्रसाद की पहली प्रकाशित कृति कौन-सी है ?
चित्राधार
5. निम्नलिखित में कौन कवि छायावादी है ?
जयशंकर प्रसाद
6. चेतना थक सो रही है। उस समय श्रद्धा अपने को क्या बताती है ? -मलय की बात
7. प्रसाद जी का जन्म हुआ था- 1889
8. 'सुँघनी साहू' परिवार किनसे सम्बद्ध था ?
जयशंकर प्रसाद से
9. 'तुमुल कोलाहल कलह में' किसकी रचना है? (bseb 2018)
जयशंकर प्रसाद
10. जयशंकर प्रसाद का महाकाव्य- कामायनी
11.'तुमुल कोलाहल कलह में' शीर्षक कविता निम्नांकित में से - कामायनी
12. भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित रचना है- उर्वशी
13. जयशंकर प्रसाद कैसे कवि थे? - छायावादी
14. जयशंकर प्रसाद किस काल के कवि -आधुनिक काल
15. सफलतम नाट्यकृति है- - ध्रुवस्वामिनी
16. 'कंकाल' क्या है? -उपन्यास
17.' ध्रुवस्वामिनी' कैसी कृति है?- नाटक
18. देवी प्रसाद साहु जयशंकर प्रसाद के कौन थे?- पिता
19. प्रसाद जी के पिता का नाम था- देवी प्रसाद साहु
20. प्रसाद जी का जन्म कहाँ हुआ था ?- वाराणसी में
21. इनमें से कौन-सी पुस्तक प्रसाद जी की नहीं है ?
आँसू
22. इनमें से कौन-सी पुस्तक प्रसाद जी की है ?
झरना
23. जयशंकर प्रसाद की कौन-सी कृति अपूर्ण है ?
- इरावती
24. जयशंकर प्रसाद की नाट्यकृति है- (BSEB,
- ध्रुवस्वामिनी
25. 'तुमुल कोलाहल कलह में' शीर्षक कविता किस महाकाव्य का अंश है? (BSEB, 2022)
-कामायनी
26. 'झरना' शीर्षक काव्य संकलन किस कवि की रचना है? (BSEB, 2022)
-जयशंकर प्रसाद
27.जयशंकर प्रसाद का निधन कब हुआ था ?
-15 November 1937
28. जयशंकर प्रसाद की रचना कौन है ? (BSEB, 2023)- तुमुल कोलाहल कलह में

Chapter_07
पुत्र वियोग

कवि का परिचयः-
कवयित्री- सुभद्रा कुमारी चौहान
जन्म -16 अगस्त 1904 ई.
जन्म-स्थान - निहालपुर, इलाहाबाद, उत्तरप्रदेश
निधन - 15 फरवरी 1948, बसंत पंचमी के दिन नागपुर से जबलपुर वापसी कार दुर्घटना में।
माता -श्रीमती धिराज कुँवर
पिता- ठाकुर रामनाथ सिंह
पति -ठाकुर लक्ष्मण सिंह

(i) ये खंडवा मध्य प्रदेश के निवासी हैं इनका विवाह सुभद्रा कुमारी चौहान के साथ 1919 ई. में हुआ था।

(ii) ठाकुर लक्ष्मण सिंह अंग्रेज सरकार द्वारा जब्त 'कुली' प्रथा' और 'गुलामी का नशा 'नामक के लेखक, प्रसिद्ध पत्रकार, स्वतंत्रता सेनानी और कांग्रेस नेता थे।
शिक्षा-
(i) इनकी प्रारंभिक शिक्षा क्रास्थवेट गर्ल्स स्कूल, इलाहाबाद में हुई।
(ii) इसी स्कूल में में प्रसिद्ध कवयित्री कुमारी चौहान के साथ पढ़ी थी।
(iii) पुनः थियोसोफिकल स्कूल, वाराणसी में वर्ग 9 तक की पढ़ाई की।
(iv) इसके आगे की शिक्षा अधूरी छोड़कर असहयोग आंदोलन में कुछ पड़ी।
प्रधान कर्म क्षेत्र-
(i) सेवा, राजनीति, और स्वाधीनता संघर्ष में
(ii) अनेक बार कारावास गए।

(iii) मध्यप्रदेश में काँग्रेस पार्टी के M.L.A. रह चुके हैं।

ATM Classes Since-2017

विशिष्ट अभिरूचि -

(i) छात्र जीवन से ही काव्य रचना की प्रवृति रही है।

(ii) आगे चलकर प्रमुख कवयित्री एवं साहित्यकार के रूप में प्रतिष्ठा मिली।

पुरस्कार - इनकी रचना 'मुकुल' पर 1930 ई. में 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' का सेकसरिया पुरस्कार मिला था।

रचनाएँ-

(i) 'मुकुल' (कविता संग्रह) - 1930

(ii) त्रिधारा (कविता चयन)

(iii) बिखरे मोती (कहानी संग्रह)

(iv) सभा के खेल (कहानी संग्रह)

महत्वपूर्ण जानकारी

1. सुभद्रा कुमारी चौहान हिन्दी की छायावादी काव्यधारा के एवं राष्ट्रीय भाव धारा के प्रमुख कवयित्री थी।

2. राष्ट्रीय भावधारा का भारतीय नवजागरण और राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन से अभिन्न संबंध था।

3. राष्ट्रीय भावधारा का जन्म भारतेन्दु युग में ही हुआ था।

4. सुभद्रा कुमारी चौहान में एक दृढ़ता, जनतांत्रिक वैचारिकता और उत्सर्ग भावना बढ़ती ही चली गई

5. मुकुल (कविता संग्रह) एक शोकगीत रचना है।

6. मुकुल कविता संग्रह से पुत्र-वियोग कविता लिया गया है।

7. चिंतक कवि मुक्तिबोध ने कहा है कि सुभद्रा जी के साहित्य में अपने युग के गहरे मूल उद्वेग और उनके भिन्न-भिन्न रूप सहज और सरल प्रकृत शैली में प्रकट हुए हैं

8. सुभद्रा जी के प्रतिनिधि काव्य संकलन 'मुकुल' से ली गई कविता 'पुत्र वियोग' निराला (कवि) की 'सरोज स्मृति (कविता)' के बाद दूसरी प्रमुख शोकगीत माना जाता है।

9. यह कविता सुभद्रा जी के पुत्र की अचानक और जल्दी हुई मृत्यु के बाद लिखी गई है।

10. इसमें एक माँ के हृदय का गहरा और सच्चा शोक बहुत सादगी से व्यक्त हुआ है।

आज दिशाएँ भी हँसती हैं है उल्लास विश्व पर छाया, मेरा खोया हुआ खिलौना अब तक मेरे पास न आया।

अर्थ- चारों ओर खुशी और उल्लास है। सब प्रसन्न हैं, परंतु मेरा सबसे प्यारा "खिलौना" (पुत्र) अब तक मुझे वापस नहीं

शीत न लग जाए, इस भय से नहीं गोद से जिसे उतारा, छोड़ काम दौड़ कर आई 'मा' कहकर जिस समय पुकारा।

अर्थ- मैं उसे हमेशा अपनी गोद में रखती थी कि कहीं ठंड न लग जाए। जब भी वह "मा" कहकर पुकारता, मैं काम छोड़कर दौड़ पड़ती थी ।

थपकी दे दे जिसे सुलाया, जिसके लिए लोरियाँ गाई, जिसके मुख पर जरा मलिनता देख आँख में रात बिताई।

अर्थ- मैंने उसे थपकी देकर सुलाया, उसके लिए लोरियाँ गाईं। उसके चेहरे पर ज़रा सी उदासी देखकर मैंने पूरी रात जागकर गुज़ारी ।

जिसके लिए भूल अपनापन पत्थर को भी देव बनाया, कहीं नारियल, दूध, बताशे कहीं चढ़ाकर शीश नवाया।

अर्थ- बेटे की सलामती के लिए मैंने अपना सब कुछ भुला दिया। पत्थर को भी देवता मानकर पूज लिया, नारियल, दूध, बताशे चढ़ाकर भगवान से उसकी रक्षा की प्रार्थना की।

फिर भी कोई कुछ न कर सका छिन ही गया खिलौना मैं असहाय विवश बैठी रही उठ गया छौना मेरा।

अर्थ- लेकिन कोई भी कुछ न कर सका। मेरा प्यारा बेटा मुझे छोड़कर चला गया और मैं बेबस होकर देखती रह गई।

तड़प रहे हैं विकल प्राण ये मुझको पल भर शांति नहीं है बह खोया धन पा न सकूँगी इसमें कुछ भी भ्रांति नहीं है।

अर्थ- मेरा मन और प्राण तड़प रहा हैं। मुझे ज़रा भी चैन नहीं है। मैं जानती हूँ कि मेरा खोया हुआ अमूल्य रत्न (बेटा) मुझे

कभी वापस नहीं मिलेगा। फिर भी रोता ही रहता है नहीं मानता है मन मेरा
बड़ा जटिल नीरस लगता है सूना सूना जीवन मेरा ।

अर्थ- फिर भी मेरा मन मानता नहीं और रोता ही रहता है। अब जीवन बड़ा कठिन, नीरस और सूना-सा लगने लगा है।

यह लगता है एक बार यदि पल भर को उसको पा जाती
जी से लगा प्यार से सर सहला-सहला उसको समझाती

अर्थ- मुझे लगता है, अगर एक बार ही सही, मुझे मेरा बेटा मिल जाए तो मैं उसे सीने से लगाकर उसका सिर सहलाते हुए प्यार से समझाती ।

मेरे भैया मेरे बेटे अब मां को यों छोर ना जाना
बड़ा कठिन है बेटा खोकर माँ को अपना मन समझाना ।

अर्थ- मैं मन ही मन बेटे से कहती हूँ ओ मेरे प्यारे, अब माँ को इस तरह छोड़कर मत जाना। क्योंकि बेटे को खोने के बाद माँ के लिए अपने मन को समझाना बहुत कठिन है।

भाई-बहिन भूल सकते हैं पिता भले ही तुम्हें भुलावे किंतु रात-दिन की साथिन माँ कैसे अपना मन समझावे !

अर्थ- भाई-बहन तुम्हें भूल सकते हैं, पिता भी शायद तुम्हें भुला दें, लेकिन जो माँ रात-दिन तुम्हारे साथ रही है। वह माँ तुम्हें कैसे भूल सकती है?

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. माँ के लिए अपना मन समझाना कब कठिन है और क्यों ? (2020, 2023)

उत्तर- माँ बेटे के बिना जी नहीं सकती। बेटा खोने के बाद माँ अपने दिल को समझा नहीं पाती। वह बेटे को दुलार करके कहती है कि मुझे छोड़कर कभी न जाना।

2. पुत्र को छौना कहने में क्या भाव छिपा है ? उद्घाटित करें (2012, 2013)

उत्तर- माँ का बच्चा हिरण के शावक जैसा कोमल होता है। माँ को उसके लिए अनेक कष्ट उठाने पड़ते हैं। अतः माँ उसे 'छौना' कहकर अपार स्नेह जताती है।

3. पुत्र के लिए माँ क्या क्या करती हैं? 'पुत्र वियोग' शीर्षक कविता के आधार पर उत्तर दें। (2022)

उत्तर- सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता 'पुत्र वियोग' में माँ अपने बेटे को ठंड से बचाती है, गोद से नीचे नहीं उतारती है, पुकारते ही दौड़ जाती है, थपकी देकर सुलाती और लोरियाँ गाती है। बेटे के दुखी होने पर रातभर जागती है। उसकी सलामती के लिए देवताओं पर नारियल, दूध और बताशे चढ़ाती है। बेटे के निधन पर वह एक बार उसे देखने को तरसती है और दिन रात उसे याद करती है।

ATM Classes Since-2017

4. कवयित्री का 'खिलौना' क्या हैं? (2024)

उत्तर- 'पुत्र वियोग' कविता में कवयित्री का "खिलौना " उसका पुत्र है जो खो गया है। उसके वियोग में माँ तड़पती और व्याकुल रहती है। बेटे की मृत्यु से माँ का हृदय गहरे दुख से भर गया है।

5. 'पुत्र वियोग' शीर्षक कविता में कवयित्री स्वयं को असहाय और विवश क्यों कहती है? (2025)

उत्तर - पुत्र वियोग कविता में माँ अपने बेटे की पूरी तरह देखभाल की, उसे ठंड और बीमारी से बचायी, परंतु इन सब कोशिशों के बावजूद वह अपने पुत्र को न बचा सकी। अतः स्वयं असहाय और विवश रह गई ।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नः-

1. सुभद्रा कुमारी चौहान की रचना 'पुत्र वियोग' का सारांश लिखें। (2014, 2018, 2024)

उत्तर- "पुत्र वियोग" कविता सुभद्रा कुमारी चौहान के द्वारा लिखी गई है। इस कविता में एक माँ के पुत्र की अकाल मृत्यु पर उठने वाले "दुख और करुणा" को बहुत ही सरल और भावपूर्ण दिखाया गया है। सारे संसार में खुशियाँ हैं, लेकिन माँ का प्यारा बेटा मर गया। माँ हमेशा अपने बेटे की बहुत देखभाल की। उसे गोद में रखी, थपकी दी, लोरी गाकर सुनाई। उसका मन हमेशा बेटे के लिए ही चिंतित रहता था। माँ भगवान से बेटे के कल्याण की प्रार्थना की।
बेटे की मृत्यु के बाद माँ बहुत दुखी हो गई। उसका जीवन अब सुना और नीरस हो गया है। माँ अपने बेटे को कभी नहीं भूल सकती। अगर वह वापस आ जाता, तो उसे और प्यार करती और समझाती कि कभी माँ को छोड़कर मत जाना। कविता पढ़कर पाठक को माँ के दुःख का एहसास होता है।

2. " पुत्र वियोग " शीर्षक कविता में पुत्र को 'छौना' कहने में क्या भाव छुपा है, उसे उद्घाटित करें। (2022)

उत्तर- छौना का अर्थ है- "हिरण का बच्चा"। यह छोटा, कोमल और चंचल होता है। माता अपने बेटे को प्यार से छौना कहती हैं। जिस तरह हिरण हमेशा अपने शावक को खतरे से बचाता है। उसी तरह माँ का पूरा ध्यान भी अपने बेटे पर रहता है। माँ उसे ठंड न लगे, इसलिए उसे गोद से नहीं उतारती है। बेटा अगर 'माँ' कहता है, तो वह सब कुछ छोड़कर उसकी ओर दौड़ती है। इसलिए मां अपने पुत्र को 'छौना' कहकर बुलाती है। यह शब्द मां के ममता और प्यार को दर्शाता है।

सप्रसंग व्याख्यात्मक प्रश्नः-

1.आज दिशाएँ भी हँसती हैं , उल्लास विश्व पर छाया,
मेरा खोया हुआ खिलौना ,अब तक मेरे पास न आया।
(2013, 2020)
उत्तर- प्रस्तुत पंक्तियां सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित कविता "पुत्र वियोग" से ली गई है। इस पंक्ति के माध्यम से कवयित्री का कहना है कि चारों ओर खुशी और उल्लास है। सब प्रसन्न हैं, किन्तु मेरा सबसे प्यारा "खिलौना " (पुत्र) अब तक मुझे नहीं मिला। अभी तक लौटकर मेरे पास नहीं आया।

2.भाई बहिन भूल सकते हैं ,पिता भले ही तुम्हें भुलावे किंतु रात-दिन की साथिन माँ कैसे अपना मन समझावे !(2021, 2023)

उत्तर- प्रस्तुत पंक्तियां सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित कविता "पुत्र वियोग " से ली गई है। इस पंक्ति के माध्यम से कवयित्री का कहना है कि भाई और बहन तुम्हें भूल सकते हैं, पिता भी शायद तुम्हें भुला दें, लेकिन जो माँ रात-दिन तुम्हारे साथ रही है। वह माँ तुम्हें कभी नहीं भूल सकती है।

3. फिर भी रोता ही रहता है ,नहीं मानता है मन मेरा बड़ा जटिल नीरस लगता है सूना सूना जीवन मेरा ।(2015, 2016, 2021)

उत्तर- प्रस्तुत पंक्तियां सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित कविता "पुत्र वियोग " से ली गई है। इस पंक्ति के माध्यम से कवयित्री का कहना है कि पुत्र की मृत्यु के बाद भी मेरा मन मानता नहीं और वियोग में मन रोता ही रहता है। अब जीवन बड़ा कठिन, नीरस और सूना-सा लगने लगा है।

4. थपकी दे दे जिसे सुलाया, (2019, 2024) जिसके लिए लोरियाँ गाई, जिसके मुख पर जरा मलिनता देख आँख में रात बिताई।

उत्तर- प्रस्तुत पंक्तियां सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित कविता "पुत्र वियोग" से ली गई है। इस पंक्ति के माध्यम से कवयित्री का कहना है कि मैंने अपने पुत्र को थपकी देकर सुलाया, उसके लिए लोरियाँ गाई। उसके चेहरे पर जरा सी उदासी देखकर मैंने पूरी रात जागकर गुज़ारी ।

5. शीत न लग जाए, इस भय से (2019)
नहीं गोद से जिसे उतारा, छोड़ काम दौड़ कर आई 'मा' कहकर जिस समय पुकारा।
उत्तर- प्रस्तुत पंक्तियां सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित कविता "पुत्र वियोग " से ली गई है। इस पंक्ति के माध्यम से कवयित्री का कहना है कि वह अपने पुत्र को हमेशा अपनी गोद में रखती थी कि कहीं ठंड न लग जाए। जब भी वह "मा" कहकर पुकारता, मैं काम छोड़कर दौड़ पड़ती थी।

6. बड़ा कठिन है बेटा खोकर माँ को अपना मन समझाना। 2014

उत्तर- प्रस्तुत पंक्तियां सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित कविता "पुत्र वियोग " से ली गई है। इस पंक्ति के माध्यम से कवयित्री का कहना है कि मैं मन ही मन बेटे से कहती हूँ ओ मेरे प्यारे, अब माँ को इस तरह छोड़कर मत जाना। क्योंकि बेटे को खोने के बाद माँ के लिए अपने मन को समझाना बहुत कठिन है।

7. तड़प रहे हैं विकल प्राण ये मुझको पल भर शांति नहीं है वह खोया धन पा न सकूँगी इसमें कुछ भी भ्रांति नहीं है।(2024)

उत्तर- प्रस्तुत पंक्तियां सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित कविता "पुत्र वियोग " से ली गई है। इस पंक्ति के माध्यम से कवयित्री का कहना है कि मेरा मन और प्राण तड़प रहा हैं। मुझे ज़रा भी चैन नहीं है। मैं जानती हूँ कि मेरा खोया हुआ अमूल्य रत्न (बेटा) मुझे कभी वापस नहीं मिलेगा ।

वस्तुनिष्ट प्रश्नः -

1. सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता है- (BSEB, 2019) -पुत्र वियोग
2. 'पुत्र वियोग' किसकी रचना है (BSEB, 2018, 21) - सुभद्रा कुमारी चौहान
3.माँ अपने मन को समझाना कब कठिन हो जाता है?
- पुत्र की मृत्यु पर
4. कवयित्री का खिलौना क्या है ?-उसका पुत्र
5. कवयित्री स्वयं को असहाय और विवश क्यों कहती है -पुत्र वियोग के कारण
6. 'पुत्र वियोग' शीर्षक कविता है एक-शोक गीत
7. 'पुत्र वियोग' शीर्षक कविता किस काव्य-संग्रह से ली गई है ?-मुकुल से
8. क्रास्थवेट गर्ल्स स्कूल में सुभद्रा कुमारी चौहान की प्रिय मित्र कौन थीं?-महादेवी वर्मा
10. सुभद्रा कुमारी चौहान का प्रतिनिधि कविता संग्रह कौन-सा है?-मुकुल
11. सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म कब हुआ ? - 16 अगस्त, 1904
12. सुभद्रा कुमारी चौहान के पिता का नाम क्या था ? - ठाकुर रामनाथ सिंह
13. सुभद्रा कुमारी चौहान के पति का नाम क्या था ? (BSEB. 2024)-ठाकुर लक्ष्मण सिंह
14. 'बिखरे मोती' क्या है ?-कहानी संग्रह
15. सुभद्रा जी की मृत्यु का क्या कारण था ?
- कार दुर्घटना

ATM Classes Since 2017

16. इनमें से कौन-सी रचना सुभद्रा नहीं है ? (BSEB, 2022)
(A) मुकुल (B) बिखरे मोती
(C) त्रिधारा (D) चित्राधार
17. सुभद्रा जी को हिन्दी साहित्य सम्मेलन का सैक्सरिया पुरस्कार उनकी किस रचना पर मिला था ?-मुकुल
18. माँ ने किसके भय से अपने लाल को गोद से नहीं उतारा था ? (BSEB, 2019, 23)-शीत के डर से
19. पुत्र वियोग से माँ का जीवन कैसा हो गया है ? (BSEB, 2023-सूना-सूना
20. माँ पुत्र की किस प्रकार की साथिन है ?
-रात-दिन की
21. वर्ग 9 तक की पढ़ाई के बाद शिक्षा अधूरी छोड़कर कौन कंवयित्री असहयोग आन्दोलन में कूद पड़ी थीं ? (BSEB,2022)-सुभद्रा कुमारी चौहान
22. " मेरा खोया हुआ खिलौना, अब तक मेरे पास न आया। " - यह पंक्ति किस शीर्षक कविता से है? [2023A]-पुत्र-वियोग
23. सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म-स्थान कहाँ है? [2023A]-इलाहाबाद
24. मैं असहाय विवश बैठी ही रही उठ गया छौना मेरा' यह पंक्ति किस शीर्षक कविता से है ? [2021A]
-पुत्र वियोग
25. सुभद्रा कुमारी चौहान और महादेवी वर्मा किस स्कूल में एक साथ पढ़ती थी? [2022A]
-क्रास्थवेट गर्ल्स स्कूल, इलाहाबाद
26. ' छोड़ काम दौड़ कर आई 'माँ' कहकर जिस समय पुकारा' - किस कविता की पंक्ति है? [2024]
पुत्र-वियोग
27. पुत्र वियोग' शीर्षक कविता कैसी रचना है? [2022A]-शोक गीत
28. फिर भी कोई कुछ न कर सका, छिन ही गया खिलौना मेरा' - यह पंक्ति किस शीर्षक कविता से है? [2024A]-पुत्र वियोग

Chapter_08

उषा (कविता)

कवि का परिचय

कवि - शमशेर बहादूर सिंह
जन्म 13 जनवरी 1911
जन्म स्थान देहरादून उतराखंड
निधन 1993 ई०
माता- प्रभुदेई
पिता- तारीफ सिंह (कलेक्ट्रिएट में रीडर और साहित्य प्रेमी)
शिक्षा -
(i) 1928 में हाई स्कूल पास किए।
(ii) 1931 में इंटर किये।
(iii) 1933 में B.A. इलाहाबाद से किये।
(iv) 1938 में M.A. (English) इलाहाबाद से किये।
पारिवारिक जीवन -
(i) 1929 में धर्म देवी से विवाह किये।
(ii) 1933 ई. में पत्नी की मत्यु हो गई।
(iii) पत्नी की मृत्यु के बाद परिवार विहीन हो गया।
वृति -
(i) रूपाभ, कहानी, माया, नया साहित्य, नया पथ एवं मनोहर कहानियाँ के संपादन कार्य से जुड़े। र, नया पथ

(ii) उन्होनें उर्दू हिन्दी कोश का भी संपादन किया।

(iii) 1981-85 तक 'प्रेमचंद सृजनपीठ' विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन के अध्यक्ष बने।
→ यात्रा- 1978 में सोवियत रूस की यात्रा किये।
- कृतियाँ उन्होनें 1932-33 में लिखना शुरू किये थे ।
(i) दूसरा सप्रक - 1951
(ii) कुछ कविताएँ - 1959
(iii) कुछ और कविताएँ - 1961
(iv) चुका भी नहीं हूँ मैं - 1975
(v) इतने पास अपने- 1980
(vi) उदिता - 1980
(vii) बात बोलेगी-1981
(viii) काल तुझसे होड़ है मेरी- 1982
(ix) ये गजल संग्रह है।
कहीं बहुत दूर से सुन रहा हूँ।
टूटी छुई बिखरी हुई।
सुकुन की तलाश

महत्वपूर्ण जानकारी

(1) 'शमशेर बहादुर सिंह' अज्ञेय, नागार्जुन आदि के समकालीन कवि है।
(2) उन्हे प्रयोगशील कवि के रूप में 'दूसरा सप्रक' से पहचान मिली।

(3) उन्होनें लेखन कार्य तीस के दशक के दशक में शुरू किया।
(4) उन्हें स्वच्छंदतावाद, प्रगतिवाद, प्रयोग कवितावादी, वस्तुवादी, यथार्थवाद और कलावादी कवि के रूप में जाना जाता है।
(5) उन्हें कवियों का कवि कहा जाता है।
(6) यहाँ उनकी प्रसिद्ध कविता 'उषा' संकलित है है जिसमें उन्होने उषा का गतिशील चित्रण बिंबों द्वारा प्रस्तुत किया है।
(7) उषा कविता प्रकृति वर्णन से संबंधित है।
(8) शमशेर ऐसे कवि है जो अपना असर धीरे धीरे डालते है-अरूण कमल (कथन)

कविता

प्रातः नभ था- बहुत नीला, शंख जैसे
भोर का नभ
राख से लीपा हुआ चौका
[अभी गीला पड़ा है]
बहुत काली सिल जरा से लाल केसर से
कि जैसे धुल गई हो
स्लेट पर या लाल खड़िया चाक मल दी हो किसी ने
अर्थ- कवि ने इस कविता में भोर होने (सूर्योदय) के पहले के समय और उस समय की आकाश की सुन्दरता का बहुत ही सुंदर चित्रण किये हैं, जिसे उषाकाल (सुबह) भी कहते हैं। उस समय आकाश बिल्कुल नीला और शंख के समान साफ दिखाई देता है। तब यह दृश्य ऐसा लगता है जैसे किसी ने चौका (रसोईघर) को राख से लेप दिया हो। फिर धीरे-धीरे पूरब दिशा में हल्की लालिमा फैल जाती है। तब आकाश ऐसा प्रतीत होता है जैसे "काली सिल (मशाला पिसने वाला पत्थर)" पर लाल केसर घिस दी गई हो या किसी ने स्लेट पर लाल खड़िया चाक रगड़ दी हो।

नील जल में या किसी की गौर झिलमिल देह जैसे हिल रही हो। और
जादू टूटता है उस उषा का अब सूर्योदयहो रहा है।

अर्थ- नीले जल में ऐसा लगता है जैसे किसी का गोरा और चमकता शरीर लहरों के साथ हिल रहा हो। लेकिन यह सुंदर दृश्य अधिक देर तक नहीं रहेगा क्योंकि, अब सूरज निकलने ही वाला है और उषा (सुबह की लालिमा) का यह जादुई रूप समाप्त होने ही वाला है। अर्थात् उषा का सौंदर्य सूर्योदय तक ही रहता है, उसके बाद बदल जाता है।

लघु उत्तरीय प्रश्नः -

1. प्रातः काल का नभ कैसा है? [2011, 2015, 2016, 2017, 2020, 2024]
उत्तर- प्रातः काल का नभ निले शंख के समान चमकीला और पवित्र है।

2. उषा का जादू कैसा है? [2015, 2016, 2017, 2023]
उत्तर- उषा का जादू बहुत मनमोहक है। उसके कारण आकाश कभी नीले शंख जैसा, कभी राख से लीपा रसोईघर जैसा और कभी काली सिल पर लाल केसर के जैसा दिखाई देता है। ऐसी सुंदरता केवल सूर्योदय के पहले ही देखने को मिलता है।

ATM Classes Since-2017

3. 'उषा' कविता में कवि को को सुबह का का आकाश कैसा दिखता है? (2018)
उत्तर- उषा कविता में कवि को सुबह का आकाश कभी नीले शंख जैसा, कभी राख से लीपा रसोईघर जैसा और कभी काली सिल पर लाल केसर के जैसा दिखाई देता है। ऐसी सुंदरता केवल सूर्योदय के पहले ही देखने को मिलता है।

4. 'लाल केसर और लाल खड़िया चाक' किसके लिए प्रयुक्त है? [2020, 2024]
उत्तर- कवि शमशेर बहादुर सिंह ने 'लाल केसर' और 'लाल खड़िया चाक' का प्रयोग सुबह के आकाश की लालिमा दिखाने के लिए किया है।

5. नील जल में किसकी गौर देह हिल रही है? उषा शीर्षक कविता के आधार पर उत्तर दें? [2022, 2025]
उत्तर- नीले जल में झिलमिलाती गौर देह सूर्य का प्रतीक है। जब सूर्य की सुनहरी किरने जल के सतह पर पड़ती तो ऐसा लगता हैं जैसे कोई गोरा देह हिल रही हो।

6. 'राख से लीपा हुआ चौका' के द्वारा कवि ने क्या कहता चाहा है? (2022)
उत्तर- कवि कहना चाहते हैं कि प्रातःकाल का नीला और चमकता आकाश ऐसा लगता है "जैसे राख से लीपा हुआ चौका हो" जो अभी भी गीला और चमकदार है।

7. प्रातः काल के नभ की तुलना बहुत नीला बहुत नीला शंख से क्यों की गई है।
उत्तर- कवि शमशेर तुलना बहुत निला शंख से इसलिए किये हैं क्योंकि, जिस प्रकार शंख की ध्वनी बहुत पवित्र और मनमोहक होती है, ठीक उसी प्रकार प्रातःकाल का आकाश भी बहुत नीला और शांत होती है। जो सबके मन को हर लेती है। र बहादुर । सिंह ने प्रातः काल के नभ की नीले जल में झिलमिलाती गोरी देह जैसी आभा दिखती है। लेकिन यह जादुई रूप सूर्योदय तक ही रहता है, उसके बाद बदल जाता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नः-

1. उषा शीर्षक कविता का केन्द्रीय भाव लिखिए। (2011,2014,2021)
उत्तर- उषा शीर्षक कविता शमशेर बहादुर सिंह के द्वारा रचित हैं। कवि ने इस कविता में भोर होने के पहले के समय और उस समय की आकाश की सुन्दरता का बहुत ही सुंदर चित्रण कियें हैं, जिसे उषाकाल (सुबह) भी कहते हैं। इस कविता का केन्द्रीय भाव उषा (प्रातः काल) की सुंदरता है। सूर्योदय के पहले आकाश बहुत नीला और शंख के समान साफ दिखता है, फिर उसमें लालिमा फैल जाती है जो बहुत मनोहर लगती है। यह दृश्य ऐसा प्रतीत होता है जैसे रसोईघर राख से लीपा हो, सिल पर केसर घिसा हो या स्लेट पर लाल खड़िया चाक रगड़ा गया हो।

2. 'उषा' शीर्षक कविता में 'राख से लीपा हुआ चौका' के द्वारा कवि ने क्या कहना चाहा है? (2022)
उत्तर- कवि ने आकाश की सुंदरता को बहुत ही सरल और घरेलू ढंग से व्यक्त किया है। कवि कहते है कि जेसे घर में प्रातःकाल स्त्रियाँ रसोईघर को गोबर या राख से लीपकर शुद्ध और पवित्र बनाती हैं, वैसे ही प्रातःकाल का आकाश भी बिल्कुल साफ और शुद्ध दिखाई देता है। सुबह-सुबह आकाश का रंग कुछ नीला और हल्का-सा धुँधला होता है। यह नीला आकाश राख से लीपे गए चौके (रसोईघर) जैसा प्रतीत होता है।

3. "जादू टूटता है इस उषा का अब सूर्योदय हो रहा है।" (2014,2017,2020)
उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति शमशेर बहादुर सिंह द्वारा रचित उषा शीर्षक कविता से ली गई हैं। इसमें कवि ने बिम्बों के सहारे उषाकाल के आकाश की सुंदरता का वर्णन किया है। नीले और लाल रंगों से भरा आकाश बहुत सुंदर लगता है, पर सूरज निकलते ही यह सौंदर्य मिट जाता है।

4. "बहुत काली सिल जरा से लाल केसर से कि जैसे घुल गई हो।" (2022)
उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति शमशेर बहादुर सिंह द्वारा रचित उषा शीर्षक कविता से ली गई है। कवि का कहना है कि जैसे काली सिल पर केसर की लालिमा चमकती है, वैसे ही प्रातःकाल का आकाश लालिमा से भरा सुंदर दिखाई देता है।

सप्रसंग व्याख्यात्मक प्रश्नः-

1. "जादू टूटता है इस उषा का अब सूर्योदय (2014, 2017, 2020)
उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति शमशेर बहादुर सिंह द्वारा रचित उषा शीर्षक कविता से ली गई हैं। इसमें कवि ने ने उषाकाल के आकाश की सुंदरता का वर्णन किया है। नीले और लाल रंगों से भरा आकाश बहुत सुंदर लगता है, पर सूरज निकलते ही यह सौंदर्य मिट जाता है।

2. "बहुत काली सिल जरा से लाल केसर से कि जैसे धुल गई हो ।" (2022)
उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति शमशेर बहादुर सिंह द्वारा रचित उषा शीर्षक कविता से ली गई है। कवि का कहना है कि जैसे काली सिल पर केसर की लालिमा चमकती है, वैसे ही प्रातःकाल का आकाश लालिमा से भरा सुंदर दिखाई देता है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. शमशेर ने कब लिखना प्रारम्भ किया ?
1932-33
2. दूसरा सप्तक कब प्रकाशित हुआ ?-1951
3. शमशेर को किस नाम से पुकारा जाताथा?
-कवियों के कवि
4. 'शमशेर ऐसे कवि हैं जो अपना असर धीरे-धीरे डालते हैं।' यह कथन किसका है?-अरुण कमल
5. 'उषा' शीर्षक कविता के कवि कौन हैं ?-शमशेर बहादुर सिंह
6. किस कवि ने सलि, खड़िया, चौका शब्दों का प्रयोग किया है?-शमशेर बहादुर सिंह
7. कवि शमशेर बहादुर सिंह ने प्रातःकाल के आसमान की तुलना किससे की है ?-नीले शंख से
8. निम्न में शमशेर बहादुर सिंह की कविता कौन-सी है ?
-उषा
9. कौन-सी कृति शमशेर बहादुर सिंह की नहीं है ?
-भारत: इतिहास और संस्कृति
10. 'सुकून की तलाश' क्या है ?-गजलों का संग्रह
11. शमशेर बहादुर सिंह का जन्म कब हुआ था ?
- 13 जनवरी, 1911
12. शमशेर बहादुर सिंह की पत्नी का नाम
-धर्म देवी
13. कौन-सी सिंह की है ?-काल तुझसे होड़ है मेरी
14. किसका जादू टूटता है ?-उषा का
15. शमशेर बहादुर सिंह का जन्म कहाँ हुआ था ?
- देहरादून में
16. उषा का जादू कब टूटता है ?-सूर्योदय होने पर
17. 'राख से लीपा हुआ चौका' यह पंक्ति किस शीर्षक कविता की है ? 2024, BSEB, - उषा
18. 'सुकून की तलाश' किसकी रचना है ? (BSEB, 2020)- शमशेर बहादुर सिंह
19. 'प्रकृति वर्णन' से संबंधित कविता है- (BSEB, 2021A) - उषा
20. 'कवियों का कवि' किस कवि को कहा जाता है ? (BSEB, 2021)-शमशेर बहादुर सिंह
21. "नील जल में या किसी की गौर झिलमिल देह जैसे हिल रही हो" यह पंक्ति किस शीर्षक कविता से है? (BSEB,2022) - उषा
22. शमशेर बहादुर सिंह ने सोवियत रूस की यात्रा कब की (2022) - 1978

ATM Classes Since-2017

Chapter_09

जन – जन का चेहरा एक

कवि का परिचय_

जन्म- 13 नवंबर 1917

जन्म स्थान- श्योपुर, ग्वालियर, मध्य प्रदेश।

निधन- 11 सितंबर 1964

माता -पार्वती बाई

पिता - माधवराज मुक्तिबोध

* शिक्षा - (i) उज्जैन, विदिशा, अमझरा, सरदारपुर आदि स्थानों पर प्रारंभिक शिक्षा ग्रहण किये।

(ii) 1930 में उज्जैन के माधव कॉलेज ग्वालियर बोर्ड की मिडिल परीक्षा में असफल हो गए थे।

(iii) पुनः 1931 में सफलता प्राप्त किये।

(iv) 1935 में माधव कॉलेज से इंटरमीडिएट किये।

(v) 1937 में इंदौर के होल्कर कॉलेज से B.A. में असफल हुए। पुनः 1938 में पास हुए।

(vi) 1953 में नागपुर विश्वविद्यालय से M.A. (हिन्दी) किये।

* वृति (पेशा)

(i) 20 वर्ष की छोटी उम्र में बड़नगर मिडिल स्कूल में मास्टरी अथवा पढ़ाना शुरू किये।

(ii) शुजालपुर, उज्जैन, कोलकाता, इंदौर, मुंबई, बंगलौर, बनारस, जबलपुर आदि स्थानों पर भिन्न-भिन्न प्रकार के नौकरियाँ किये -

मास्टरी से वायुसेना ।

पत्रकारिता से पार्टी ज्वाइन ।

(iii) 1948 में नागपुर आए ।

(iv) नागपुर के प्रकाशन तथा सूचना विभाग में पत्रकार के रूप में अक्टूबर 1948 से सितंबर 1965 तक कार्य किये।

(v) फिर नागपुर में ही रेडियों के हिन्दी प्रादेशिक सूचना विभाग में अक्टूबर 1954 से अक्टूबर 1956 तक कार्य किये।

(vi) फिर 1956 में नागपुर य से निकलने वाले पत्र 'नया खून' का भी संपादन किये।

(vii) 1958 में "नया खून" से मुक्त हो गए।

(viii) और अन्त में 1958 से 'दिग्विजय महाविद्यालय' राजनाँद गाँव में प्राध्यापक पद पर कार्य किये।

* अभिरुचि-

(i) अध्ययन अध्यापन (पढ़ना-पढ़ाना)

(ii) लेखन- पत्रकारिता

(ii) राजनीति की नियमित अनियमित की समझ

* कृतियाँ / रचनाएँ -

कविता संग्रह

(i) 'तार सप्तक' के एक कवि

(ii) चाँद का मुँह टेढ़ा है

(iii) भूरी-भूरी खाक धूल

कथा साहित्य

(ii) विपात्र

(iii) सतह से उठता आदमी

आलोचना

(i) कामायनी एक पुनर्विचार

(ii) नई कविता का आत्मसंघर्ष

(iii) नए साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र (इसका नया संस्करण "आखिर रचना क्यों ?" नाम से प्रकाशित है।)

(iv) समीक्षा की समस्याएँ

(v) एक साहित्यिक की डायरी

* इतिहास

(i) भारत इतिहास और संस्कृति

Note. मुक्तिबोध रचनावली (6 खंडों में) नेमिचंद्र जैन के संपादन में राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित है।

महत्वपूर्ण जानकारी

1. गजानन माधव मुक्तिबोध बीसवीं शताब्दी के प्रमुख हिन्दी कवि, आलोचक, चिंतक और कथाकार थे।

2. उनका जन्म मध्य प्रदेश में हुआ था किन्तु वे मराठी थे।

3. वे हिंदी साहित्य में प्रयोगवाद के कवि के रूप में प्रसिद्ध हुए।

4. अज्ञेय द्वारा संपादित 'तार सप्तक' के एक कवि के रूप में वे सामने आए थे।

5. वे अपने रचनात्मक जीवन में दो प्रधान वैश्विक विचारधाराओं अस्तित्ववाद एवं मार्क्सवाद से प्रभावित हुए और एक सच्चे मार्क्सवादी बन गए।

6. मुक्तिबोध स्वभाव से जिज्ञासु, साहसी और सत्य की खोज करने वाले लेखक थे।

7. उनका जीवन और साहित्य एक-दूसरे से जुड़े हुए थे।

8. निराला से तुलना उन्होंने अपने जीवन से ही साहित्य की कीमत चुकाई । इस दृष्टि से वे निराला के समान महान क्रांतिकारी कवि माने जाते हैं।

9. उन्होंने कविताएँ, कहानियाँ, डायरी, आलोचना और उपन्यास भी लिखा।

10. उनकी रचनाएँ परंपरागत ढाँचे को तोड़ती हैं क्योंकि उनका अनुभव और यथार्थबोध अद्वितीय था।

11. उनकी दृष्टि केवल वर्तमान तक नहीं, बल्कि अतीत और भविष्य तक पहुँचती थी ।

12. उन्होंने ज्यादातर लंबी कविताएँ ही लिखीं है, पर यह कविता बाकी कविता की तुलना में कम लम्बी हैं।

13. उनकी कविताओं में पीड़ित और संघर्षशील जनता का चित्र है, जो न्याय, शांति और बंधुत्व के लिए प्रयत्नशील है।

14. उन्होंने जनता में छिपी हुई एकता को देखा और उसे अपनी कविता में प्रेरणा और उत्साह का स्रोत बनाया।

15. मुक्तिबोध एक क्रांतिकारी कवि हैं।

(1) चाहे है जिस देश प्रांत पुर का हो जन-जन का चेहरा एक !
एशिया की, यूरोप की, अमरीका की गलियों की धूप एक ।

अर्थ- कवि कहते है कि मनुष्य चाहे किसी भी देश, राज्य या शहर का हो, सबका चेहरा एक जैसा है। एशिया, यूरोप या अमेरिका की गलियों में भी धूप एक समान पड़ती है। यानी मनुष्य और प्रकृति सब जगह एक समान हैं।

(2)कष्ट-दुख संताप की, चेहरों पर पड़ी हुई झुर्रियों का रूप एक ! जोश में यों ताकत से बँधी हुई मुट्ठियों का एक लक्ष्य !

अर्थ- कवि कहते है कि दुख और कष्ट से हर इंसान के चेहरे पर झुर्रियाँ एक जैसी दिखती हैं। उसी तरह जब लोग जोश और ताकत से मुट्ठियाँ बाँधते हैं तो उनका लक्ष्य भी एक हो जाता है।

(3) पृथ्वी के गोल चारों ओर के धरातल पर है एक पक्ष । जलता हुआ लाल कि भयानक सितारा एक, उद्दीपित उसका विकराल सा इशारा एक ।

अर्थ- कवि कहते है कि पूरी पृथ्वी पर पर जनता एकजुट है और उसका मकसद भी एक ही है। आकाश में जलता हुआ लाल तारा उनके संघर्ष और क्रांति का भयानक प्रेरणादायक संकेत है।

(4)गंगा में, इरावती में, मिनाम में अपार अकुलाती हुई, नील नदी, आमेजन, मिसौरी में वेदना से गाती हुई, बहती बहाती हुई जिंदगी की धारा एक;
प्यार का इशारा एक, क्रोध का दुधारा एक ।

अर्थ- कवि कहते है कि गंगा, इरावती, मिनाम, नील, आमेज़न और मिसौरी जैसी नदियों में बहने वाला जीवन का प्रवाह एक जैसा है। सब जगह इंसानों का प्यार और क्रोध की भावना एक जैसा है।

ATM Classes Since-2017

(5)पृथ्वी का प्रसार अपनी सेनाओं से किए हुए गिरफ्तार, गहरी काली छायाएँ पसारकर, खड़े हुए शत्रु का काले से पहाड़ पर काला-काला दुर्ग एक, जन शोषक शत्रु एक ।

अर्थ- कवि कहते है कि पूरी पृथ्वी पर शत्रु ने अपनी सेनाएँ फैला रखी हैं जो चारों ओर अंधकार फैला रही है। ऊँचे-ऊँचे काले किलों की तरह वह खड़ा है। यह शत्रु हर जगह जनता का शोषण एक जैसा करता है।

(6)आशामयी लाल-लाल किरणों से अंधकारचीरता सा मित्र का स्वर्ग एक; जन-जन का मित्र एक |

अर्थ- कवि कहते है कि सुबह की लाल किरणें अंधकार को चीरकर उजाला लाती हैं, ठीक वैसे ही मित्र भी जीवन में उजाला लाता है। सबका सच्चा मित्र एक ही है।

(7)विराट् प्रकाश एक, क्रांति की ज्वाला एक, धड़कते वक्षों में है सत्य का उजाला एक, लाख-लाख पैरों की मोच में है वेदना का तार एक, हिये में हिम्मत का सितारा एक। चाहे जिस देश, प्रांत, पुर का हो जन-जन का चेहरा एक ।

अर्थ- कवि कहते है कि सभी जगह एक ही प्रकाश, क्रांति और सत्य की भावना है। लाखों लोगों की पीड़ा और हिम्मत भी एक जैसी है। चाहे लोग किसी भी देश या शहर के हों, सबका चेहरा और भावना एक जैसी है। एशिया के, यूरोप के अमरीका के भिन्न-भिन्न वास स्थान;

(8)भौगोलिक, ऐतिहासिक बंधनों के बावजूद, सभी ओर हिंदुस्तान, सभी ओर हिंदुस्तान। सभी ओर बहनें हैं, सभी ओर भाई हैं। सभी ओर कन्हैया ने गायें चराई हैं जिंदगी की मस्ती की अकुलाती भोर एक; बंसी की धुन सभी ओर एक ।

अर्थ- कवि कहते है कि भले ही लोग अलग-अलग देशों और जगहों में रहते हों, सबकी भावनाएँ और जीवन एक जैसे हैं। सबकी बहनें और भाई हैं, सबकी ज़िंदगी में खुशी और मस्ती एक जैसी है, और सब जगह बंसी की धुन सुनाई देती है।

(9)दानव दुरात्मा एक, मानव की आत्मा एक | शोषक और खूनी और चोर एक । जन-जन के शीर्ष पर, शोषण का खड्ग अति घोर एक ।

अर्थ- कवि कहते है कि दुष्ट और बुरे लोग हर जगह जगह एक जैसे हैं शोषक, लूटेरे और हत्यारे सब एक ही प्रकार के हैं। जनता पर होने वाला अत्याचार भी हर जगह एक जैसा है।

(10)दुनिया के हिस्सों में चारों ओर जन-जन का युद्ध एक, मस्तक की महिमा व अंतर की ऊष्मा से उठती है ऊष्मा से ज्वाला अति क्रुद्ध एक

अर्थ- कवि कहते है कि दुनिया के हर हिस्से में लोग एक समान संघर्ष कर रहे हैं। उनके सिर की महिमा और दिल की गर्मजोशी से उठने वाली क्रोध की आग भी एक जैसी है।

(11)जीवन संतोष एक । क्रांति का, निर्माण का, विजय का सेहरा एक,
चाहे जिस देश, प्रांत, पुर का हो जन-जन का चेहरा एक !

अर्थ- कवि कहते है कि जीवन में संतोष सबके लिए एक ही है। क्रांति, निर्माण और जीत की खुशी भी सब जगह एक समान है। चाहे लोग किसी भी देश या शहर के हों, सबका चेहरा और भावना एक जैसी है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. मुक्तिबोध का जन्म हुआ था (BSEB, 2021) - श्योपुर
2. मुक्तिबोध ने एम. ए. किस विषय से किया था (BSEB 2023) - हिन्दी
3. मुक्तिबोध ने किस पत्र का सम्पादन किया था ?
-नया खून
4. 'जन-जन का चेहरा एक' शीर्षक कविता के कवि हैं-
-गजानन माधव 'मुक्तिबोध'
5. गजानन माधव मुक्तिबोध की रचना है-
जन-जन का चेहरा एक
6. कौन-सी रचना मुक्तिबोध की नहीं है ?
(A) नई कविता का आत्मसंघर्ष
(B) बिहारी पुनर्मूल्यांकन
(C) कामायनी : एक पुनर्विचार
(D) भूरी-भूरी खाक-धूल
7. मुक्तिबोध किस 'सप्तक' के कवि थे ?-तार सप्तह
8. गजानन माधव मुक्तिबोध का जन्म कब हुआ था ?
- 13 नवम्बर, 1917
9. मुक्तिबोध के पिता का क्या नाम था ?
- माधवराज मुक्तिबोध
10. कौन-सी रचना मुक्तिबोध की है?
(A) दिव्यदान (B) मुझे चाँद चाहिए
(C) भोर का तारा (D) चाँद का मुँह टेढ़ा है।
11. कौन-सी कृति मुक्तिबोध की है ?
(A) चाँद का मुँह टेढ़ा है (B) रास्ता इधर से है
(C) खंडिता (D) द्रैपदी
12. कौन-सी कृति मुक्तिबोध की नहीं है ?
(A) भूरी-भूरी खाक धूल (B) ब्रह्मराक्षस
(C) अँधेरे में (D) सीढ़ियों पर धूप
13. मुक्तिबोध की माँ का नाम क्या था ?
-पार्वती बाई
14. 'नए साहित्य का सौंदर्यशास्त्र' के लेखक है
-मुक्तिबोध
15 'कामायनी : एक पुनर्विचार' शीर्षक रचना किसकी है ? . : (BSEB,2024)-मुक्तिबोध
16. किन्होंने प्रायः लम्बी कविताएँ ही लिखी हैं?
(BSEB, 2022)- भूषण
17. गजानन माधव मुक्तिबोध अपने रचनात्मक जीवन में किन दो प्रधान वैश्विक विचारधाराओं के संसर्ग में आए? (BSEB, 2022)- अस्तित्ववाद एवं मार्क्सवाद
18. "नील नदी, अमेजन, मिसौरी में वेदना से गाती हुई बहती बहाती हुई जिन्दगी की धारा एक" यह पंक्ति किस शीर्षक कविता से है? (BSEB, 2022)
- जन-जन का चेहरा एक
19. 'काठ का सपना' किसके द्वारा लिखी गयी है? [2020A]- गजानन माधव मुक्तिबोध
20. हिन्दी साहित्य में गजानन माधव मुक्तिबोध का उदय कैसे कवि के रूप में हुआ? [2021A]
- प्रयोगवादी
21. गजानन माधव मुक्तिबोध ने किस विश्वविद्यालय से एम० ए० उत्तीर्ण किया? [2022A]
-नागपुर विश्वविद्यालय से
22. मुक्तिबोध कैसे कवि हैं?
-क्रांतिकारी
23. किन्होने प्रायः लंबी कविताएँ ही लिखीं है?
-गजानन माधव मुक्तिबोध
24. 'मुक्तिबोध' का पूरा नाम क्या है? [2023A]
-गजानन माधव मुक्तिबोध
25. साम्यवादी किससे लड़ रहा है? [2023A]
-पूँजीवादी से
26.'दानव दुरात्मा एक, मानव की आत्मा एक।' यह पंक्ति किस शीर्षक कविता की है? [2023A]
- जन-जन का चेहरा एक

लघु उत्तरीय प्रश्नः -

1. मुक्तिबोध किस परीक्षा में असफल हुए थे? (2015)
उत्तर- मुक्तिबोध 1937 ई. में इंदौर के होल्कर कॉलेज में बी.ए. की परीक्षा में असफल हुए थे।

2. कवि के अनुसार कहाँ-कहाँ की धूप एक जैसी होती है?(2015, 2019)
उत्तर- कवि मुक्तिबोध के अनुसार एशिया, यूरोप और अमेरिका की गलियों की धूप एक जैसी होती है। यानी मनुष्य और प्रकृति सब जगह समान हैं।

3. 'जन-जन का चेहरा एक' से कवि का क्या तात्पर्य है?(2012, 2013)
उत्तर- जन-जन का चेहरा एक' का मतलब है कि एशिया, यूरोप, अमेरिका आदि देशों के लोगों की पीड़ा और संघर्ष एक जैसे हैं।

4. कवि मुक्तिबोध ने सितारे को भयानक क्यों कहा है? (2020, 2023)

उत्तर- कवि मुक्तिबोध ने सितारे को भयानक इसलिए कहा क्योंकि यह पूँजीपतियों का नाश और समाजवादियों की जीत का संकेत देता है।

5. दानव दुरात्मा से क्या अभिप्राय है? (2015, 2016)
उत्तर- दानव दुरात्मा का मतलब है ऐसे लोग जो लालची और निर्दयी हैं। पूँजीपति इन दानवों की तरह हैं, जिनमें दया नहीं होती।

6. मुक्तिबोध की कविताओं की क्या पहचान है? (2019)
उत्तर- मुक्तिबोध की कविताएँ प्रगतिशील और समाजवादी विचारों वाली होती हैं। वे आम जनता और मजदूरों के संघर्ष की बात करते हैं।

7. समूची दुनिया में जन-जन का युद्ध क्यों चल रहा है? (2022)
उत्तर- समूची दुनिया में जन-जन का युद्ध इसलिए चल रहा है क्योंकि शोषकों के खिलाफ लोग लड़ रहे हैं और एक दिन आम जनता की जीत होगी।

8. 'जन-जन का चेहरा एक' शीर्षक कविता में, प्यार का इशारा और क्रोध का दुधारा से क्या तात्पर्य है? (2025)
उत्तर- इस कविता में प्यार का इशारा का मतलब है कि लोगों में ममता और करूणा भी है। और क्रोध का दुधारा से मतलव है कि अत्याचार के खिलाफ गुस्सा और संघर्ष भी है।

9. बंधी हुई मुट्ठियों का क्या लक्ष्य है?
उत्तर- बंधी हुई मुट्ठी एकता और संगठन की शक्ति का प्रतीक है। जब लोग मिलकर संघर्ष करते हैं, तो बड़े से बड़ा शत्रु भी हार जाता है। बंधी मुट्ठी जनता की की ताकत, संकल्प और साहस को दिखाती है।

10. ज्वाला कहाँ से उठती है? कवि ने उसे 'अतिकुद्ध' क्यों कहा है?
उत्तर- ज्वाला जनता के भीतर से उठती है जब उस पर अत्याचार और अन्याय होता है। इसे 'अतिकुद्ध' इसलिए कहा गया है क्योंकि यह बहुत गुस्से में सब जगह अत्याचारियों को नष्ट कर देती है।

11. पृथ्वी के प्रसार को किन लोगों ने अपनी सेनाओं से गिरफ्तार कर रखा है?
उत्तर- पृथ्वी के प्रसार को पूँजीपतियों ने गिरफ्तार कर रखा है। उन्होंने उद्योग और व्यापार के ज़रिए आम जनता की आशाएँ और स्वतंत्रता छीन ली हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नः

1. 'जन-जन का चेहरा एक' कविता का केन्द्रीय विषय क्या है? 2018)
उत्तर- गजानन माधव मुक्तिबोध की यह कविता आम जनता के संघर्ष और मेहनत को दिखाती है। दुनिया के अलग-अलग देशों में लोग अपने अधिकार, न्याय, शांति और भाईचारे के लिए संघर्ष करते हैं। कवि मानते है कि कि इन सबका दर्द और सपना एक जैसा है। इसलिए पूरी जनता का चेहरा एक जैसी ही दिखाई देता है।

2. नदियों की वेदना का क्या कारण है? स्पष्ट करें। (2023)
उत्तर- कवि ने नदियों की बहती धारा को मनुष् मनुष्य के जीवन से जोड़ा है। गंगा, इरावती, नील, आमेजन जैसी नदियाँ बहते समय दर्द और कराह जैसी ध्वनि करती हैं। यह उनकी वेदना है। जैसे नदियाँ रुकावटों से टकराकर भी आगे बढ़ती रहती हैं, वैसे ही इंसान भी दुख और कठिनाइयों के बीच संघर्ष करता रहता है। नदियों की वेदना असल में मानव जीवन की वेदना है।

3. मुक्तिबोध की रचना 'जन-जन का चेहरा एक' का सारांश लिखें। (2018)
उत्तर- गजानन माधव मुक्तिबोध की कविता 'जन-जन का चेहरा एक' में कवि ने बताया है कि दुनिया के सभी लोग मूल रूप से एक जैसे हैं। चाहे एशिया, यूरोप या अमेरिका का मनुष्य हो, सबकी पीड़ा, संघर्ष, प्यार, क्रोध और सपने एक जैसे हैं। नदियों की वेदना, जनता का संघर्ष और शोषकों का चेहरा सब जगह समान है। कवि का संदेश है कि पूरी मानवता एक है और सबको मिलकर न्याय और क्रांति की ओर बढ़ना चाहिए।

सप्रसंग व्याख्यात्मक प्रश्न

1. दुनिया के हिस्सों में चारों ओर जन-जन का युद्ध एक।'(2012, 2013)
उत्तर- प्रस्तुत पंक्तियाँ मुक्तिबोध की कविता "जन-जन का चेहरा एक " से ली गई हैं। इसमें बताया गया है कि पूरी दुनिया में बुरे लोग और शोषक हावी हैं और आम लोग दुख झेल रहे हैं। लेकिन आम जनता की आवाज हर जगह एक जैसी है, जो अन्याय और शोषण के खिलाफ उठ रही है।

2. आशामयी लाल-लाल किरणों से अंधकार चीरता सा मित्र का स्वर्ग एक; जन-जन का मित्र एक
उत्तर- प्रस्तुत पंक्तियाँ मुक्तिबोध की कविता "जन-जन का चेहरा एक" से ली गई हैं। कवि कहते है कि आजादी मिलने के बाद भी आम जनता की स्थिति नहीं सुधरी। वे आर्थिक और सामाजिक रूप से परेशान होते रहे हैं। स्वतंत्रता का फायदा केवल कुछ लोगों को मिला, इसलिए जनता की उम्मीदें टूट गईं और वे निराश हो गए।

3. एशिया के, यूरोप के अमरीका के भिन्न-भिन्न वास स्थान; भौगोलिक, ऐतिहासिक बंधनों के बावजूद, सभी ओर हिंदुस्तान, सभी ओर हिंदुस्तान।
उत्तर- प्रस्तुत पंक्तियाँ मुक्तिबोध की कविता "जन-जन का चेहरा एक " से ली गई हैं। कवि बताते हैं कि हर देश की अपनी सीमा और इतिहास है, लेकिन भारत सबसे अलग है। यहाँ का जीवन अनोखा है और भाई-बहन का प्यार बहुत खास है, जो दुनिया में कहीं और नहीं मिलता

Chapter_10
अधिनायक

कवि का परिचय_
कवि- रघुवीर सहाय
जन्म- 9 दिसंबर 1929
जन्म स्थान - लखनऊ उत्तरप्रदेश
निधन- 30 दिसंबर 1990
पिता- हरदेव सहाय (एक शिक्षक)
शिक्षा - M.A. (अंग्रेजी) लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ से।
विशेष अभिरुचि - संगीत सुनना और फिल्में देखना।
गतिविधि- अपनी और समकालीन कवियों की कविता वाचन (पढ़ने) के लिए कौमदी नाम से एक कविता केन्द्र की स्थपाना कियें और संचालन किये |
सम्मान- 'लोग भूल गए हैं' रचना के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला।
वृति-
(i) पत्रकारिता
(ii) नवजीवन लखनऊ से आरंभ किये फिर
(iii) समाचार विभाग आकाशवाणी नई नई
(iv) नवभारत टाइम्स (नई दिल्ली) में संवाददाता का कार्य किये।
(v) 1979 से 1982 तक 'दिनमान' समाचार साप्ताहिक (नई दिल्ली) के प्रधान सम्पादक रहे।
(vi) भारतीय प्रेस परिषद के सदस्य भी रहे हैं।
कृतियाँ-

> कविता
(i) दूसरा सप्तक में एक कवि के रूप में शामिल हुए।
(ii) सीढ़ियों पर धूप में
(iii) आत्महत्या के विरुद्ध
(iv) हँसो- हँसो जल्दी हँसो
(v) लोग भूल गए हैं
(vi) कुछ पत्रे कुछ चिठ्ठियाँ

> कहानी
(i) सीढ़ियों पर धूप में
(ii) रास्ता इधर से है
(iii) जो आदमी हम बना रहे हैं।

ATM Classes Since-2017